मंगलवार

10 नवम्बर 2026

● देहरादून
● वर्ष 34
● अंक 289
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

34 साल से देहरादून का विश्वास

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94

email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

मामा ने उतारा भांजे को मौत के घाट!

हमारे संवाददाता

देहरादून। तल्ला अधोईवाला में पारिवारिक संपत्ति और दीवार निर्माण को लेकर हुए विवाद में 26 वर्षीय गौरव की हत्या कर दी गई। पुलिस के अनुसार, मामले में मामा नितिन कुमार और उसके बेटे रोहित के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया, जिसके बाद कलयुगी मामा को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया गया है।

जमीन और संपत्ति के विवाद ने एक बार फिर रिश्तों को खून से रंग दिया। रायपुर थाना क्षेत्र के अधोईवाला में जमीन को लेकर चल रहे पारिवारिक विवाद में एक मामा ने अपने ही भांजे की खुखरी से हमला कर हत्या कर दी। इस खूनी वारदात में भांजे के छोटे भाई और परिवार की एक महिला पर भी जानलेवा हमला किया गया। दीपावली की मिठाई बांटने पहुंचे युवक को शायद अंदाजा भी नहीं था कि परिवार के बीच चल रहा पुराना विवाद इस कदर खूनी रूप ले लेगा।

पुलिस के अनुसार, 28 वर्षीय गौरव अपनी मां, छोटे भाई और बहन के साथ अधोईवाला में अपनी नानी के घर रहता था। वह फोटोग्राफी का काम करता था। बताया गया है कि नानी ने अपना मकान और जमीन गौरव के परिवार के नाम कर दी थी। इसी संपत्ति को लेकर गौरव का अपने मामा नितिन कुमार के साथ



लंबे समय से विवाद चल रहा था।

बताया जा रहा है कि सोमवार को गौरव दीपावली की मिठाई देने के लिए अपने छोटे मामा के घर गया था। वहां वह अपने छोटे मामा के बेटे भोली के साथ सड़क पर बातचीत कर रहा था। इसी दौरान उसका मामा नितिन कुमार कुछ लोगों के साथ वहां पहुंच गया। आरोप है कि नितिन ने गौरव और भोली के साथ मारपीट शुरू कर दी। इसके बाद दोनों को कमरे के अंदर ले जाकर उन पर खुखरी से हमला कर दिया। हमले की जानकारी मिलते ही गौरव का छोटा भाई करण मौके पर पहुंचा और बीच-बचाव करने लगा। आरोप है कि हमलावरों ने उस पर भी हमला कर दिया। इतना ही नहीं, गौरव की छोटी मामी कमला पर भी खुखरी से वार किया गया। अचानक हुए इस हमले से मौके पर अफरा-तफरी मच गई और परिवार के लोग दहशत में आ गए। खुखरी के हमले में गौरव गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे तत्काल अस्पताल ले जाया गया, जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने पर रायपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू की। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी नितिन कुमार और उसके बेटे रोहित को गिरफ्तार कर लिया है।

पुत्र ने की पिता की हत्या, गिरफ्तार

संवाददाता

देहरादून। पारिवारिक कलह के चलते पुत्र ने चाकू मारकर अपने पिता की हत्या कर दी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वही आरोपी पुत्र को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

मिली जानकारी के अनुसार गत दिवस सवा सात बजे पुलिस कंट्रोल रूम के 112 के माध्यम से सूचना प्राप्त हुई कि नितिन राणा द्वारा अपने पिता मदन राणा पुत्र धर्म सिंह राणा निवासी चलांग कुल्हन सहस्त्रधारा रोड थाना राजपुर जनपद देहरादून उम्र 62 वर्ष को चाकू मार दिया है जिस सूचना पर थाना प्रभारी राजपुर मय पुलिस बल के घटनास्थल पर तत्काल पहुंचे व घायल अवस्था में मदन राणा उपरोक्त को 108 के माध्यम से कोरोनेशन अस्पताल उपचार हेतु भेजा गया। दौराने उपचार डॉक्टर द्वारा उपरोक्त व्यक्ति को मृत घोषित किया गया। मौके पर पुलिस द्वारा एफएसएल को आवश्यक कार्रवाई हेतु बुलाया गया। पुलिस द्वारा आरोपी नितिन राणा को मौके से हिरासत में लिया गया। गिरफ्तार नितिन राणा द्वारा पुलिस पूछताछ में बताया गया कि वह नशे का आदि है तथा उसका अपने परिजनों से पारिवारिक विवाद चल रहा था।

इसी दौरान नशे में धुत नितिन राणा की अपने पिता मृतक मदन सिंह राणा से पारिवारिक कलह के चलते बहस हो गई तथा मृतक उस पर जोर-जोर से चिल्लाते हुए उसे डांटने लगे। जिससे गुस्से व उत्तेजना में आकर उसने द्वारा घर के किचन में रखे हुए सब्जी काटने वाले चाकू से अपने पिता पर जानलेवा हमला कर उन्हें गम्भीर रूप से घायल कर दिया, जिन्हें उपचार हेतु कोरोनेशन अस्पताल ले जाया गया। जिनकी उपचार के दौरान कोरोनेशन अस्पताल में मृत्यु हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

शीतकाल के लिए बंद हुए गंगोत्री धाम के कपाट

कार्यालय संवाददाता

उत्तरकाशी। उत्तराखंड की विश्वप्रसिद्ध चारधाम यात्रा अब समापन की ओर बढ़ रही है। इसी क्रम में मंगलवार, 1० नवंबर 2०26 को अन्नकूट पर्व एवं गोवर्धन पूजा के पावन अवसर पर गंगोत्री धाम के कपाट शीतकाल के लिए बंद कर दिए गए। अभिजीत मुहूर्त में दोपहर 12 बजकर ०5 मिनट पर वैदिक मंत्रोच्चार और विधि-विधान के साथ मंदिर के कपाट अगले छह माह के लिए बंद हुए। इस अवसर पर गंगोत्री धाम को पांच क्विंटल से अधिक फूलों से भव्य रूप से सजाया गया था।

कपाट बंद होने के बाद मां गंगा की भोग मूर्ति उत्सव डोली में विराजमान होकर अपने शीतकालीन प्रवास मुखबा गांव के लिए रवाना हुई। सेना के बैंड और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की मधुर धुनों के बीच निकली डोली यात्रा में हजारों श्रद्धालु शामिल हुए।



मां गंगा के जयकारों से पूरा धाम गूंज उठा। श्रद्धालुओं ने भावभीनी विदाई देकर मां गंगा से सुख-समृद्धि की कामना की।अब आगामी छह माह तक श्रद्धालु मां गंगा के दर्शन उनके शीतकालीन प्रवास मुखबा स्थित मुखीमठ में कर सकेंगे।

मंगलवार सुबह से ही गंगोत्री धाम में कपाट बंद होने से संबंधित धार्मिक अनुष्ठान शुरू हो गए थे। तीर्थ पुरोहितों ने गंगा घाट पर मां गंगा का अभिषेक और आरती की। मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना के साथ विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कराए गए। निर्धारित मुहूर्त में दोपहर 12 बजकर ०5 मिनट पर मंदिर के कपाट बंद कर दिए गए।इसके बाद मां गंगा की उत्सव डोली मुखबा गांव के लिए रवाना हुई। डोली यात्रा के दौरान सेना के बैंड और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की धुनों ने माहौल को भक्तिमय बना दिया। शीतकाल में भी गंगोत्री धाम में साधनारत रहने वाले साधु-संतों के साथ मंदिर, आश्रम और होटलों की देखरेख

◆पांच क्विंटल फूलों से सजा मंदिर, अगले छह माह मुखबा में होगी पूजा-अर्चना

करने वाले कर्मचारियों ने भी मां गंगा को भावभीनी विदाई दी।

गंगोत्री धाम के तीर्थ पुरोहित राजेश सेमवाल ने बताया कि मां गंगा की उत्सव डोली रात्रि विश्राम के लिए मार्कंडेयपुरी देवी मंदिर में ठहरेगी। यहां रातभर भजन-कीर्तन और धार्मिक अनुष्ठान होंगे। इसके बाद बुधवार को डोली मुखबा गांव पहुंचेगी, जहां अगले छह माह तक मां गंगा की पूजा-अर्चना और श्रद्धालुओं को दर्शन होंगे।

गंगोत्री धाम के कपाट शीतकाल के लिए बंद होने के बावजूद मंदिर में अखंड ज्योति निरंतर प्रज्वलित रहेगी। गंगोत्री मंदिर समिति के अध्यक्ष धर्मानंद सेमवाल ने बताया कि मंदिर में तांबे का एक विशाल दीपक रखा जाता है। इसमें पर्याप्त मात्रा में तेल भरकर अखंड ज्योति प्रज्वलित की जाती है।उन्होंने बताया कि मान्यता के अनुसार अगले वर्ष अक्षय तृतीया पर जब मंदिर के कपाट दोबारा श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोले जाएंगे, तब भी अखंड ज्योति प्रज्वलित मिलेगी।

इस वर्ष गंगोत्री धाम की यात्रा में श्रद्धालुओं की अच्छी आमद रही। कपाट खुलने से लेकर यात्रा के समापन तक 1० लाख से अधिक श्रद्धालु मां गंगा के दर्शन कर चुके हैं। यात्रा के अंतिम दिन भी धाम में श्रद्धालुओं की आवाजाही बनी रही।

दून वैली मेल

संपादकीय

दम तोड़ती सांसें

दीपावली रोशनी, खुशियों और उल्लास का पर्व है, लेकिन उत्तराखंड में इस बार दीयों की जगमगाहट के बीच हवा में घुलता जहर एक गंभीर चेतावनी दे गया। प्रदेश के मैदानी इलाकों में दिवाली के दौरान वायु प्रदूषण ने सांसों पर संकट खड़ा किया तो पहाड़ों की स्वच्छ आबोहवा का दावा भी सवालों के घेरे में आ गया, जिस उत्तराखंड की पहचान कभी शुद्ध हवा, निर्मल जल और प्राकृतिक सौंदर्य से होती थी, वहां अब प्रदूषण का फैलता दायरा बता रहा है कि पर्यावरण का संकट पहाड़ों की दहलीज तक पहुंच चुका है। देहरादून, हरिद्वार, ऋषिकेश, ऊधमसिंह नगर और हल्द्वानी जैसे शहरों में बढ़ता शहरीकरण, वाहनों का दबाव, निर्माण कार्यों से उड़ती धूल और औद्योगिक गतिविधियां पहले ही हवा की गुणवत्ता को प्रभावित कर रही हैं। दिवाली पर आतिशबाजी ने इस संकट को और गहरा दिया। सवाल यह है कि क्या प्रदूषण को केवल त्योहारों और पटाखों से जोड़कर सरकारें अपनी जिम्मेदारी से बच सकती हैं? यदि दिवाली के बाद हवा जहरीली होती है तो बाकी दिनों में प्रदूषण फैलाने वाले कारकों पर कार्रवाई क्यों नहीं होती? चिंता इससे भी बड़ी है कि अब पहाड़ भी प्रदूषण से अछूते नहीं हैं। कभी मैदानी शहरों की दमघोंटू हवा से बचने के लिए लोग पहाड़ों का रुख करते थे। आज पहाड़ी नगरों में भी वाहनों की बढ़ती संख्या, बेतरतीब निर्माण, पर्यटन का अनियंत्रित दबाव, कूड़े का निस्तारण और जंगलों में लगती आग पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ रहे हैं। नैनीताल, मसूरी, ऋषिकेश और अन्य पर्यटन स्थलों पर बढ़ता मानवीय दबाव प्रकृति की सहनशीलता की परीक्षा ले रहा है। पहाड़ों की हवा में भी अब पहले जैसी ताजगी की गारंटी नहीं रही। विडंबना देखिए कि जिस राज्य की अर्थव्यवस्था का बड़ा आधार प्रकृति, पर्यटन और पर्यावरण है, उसी राज्य में विकास की दौड़ के बीच पर्यावरण सबसे पीछे छूटता जा रहा है। सड़कें बन रही हैं, भवन खड़े हो रहे हैं, पर्यटन सुविधाओं का विस्तार हो रहा है, लेकिन इस विकास की पर्यावरणीय कीमत कौन चुका रहा है? पहाड़ों को काटकर, जंगलों को उजाड़कर और नदियों के किनारों पर निर्माण करके आखिर हम किस विकसित उत्तराखंड का सपना देख रहे हैं? विकास का अर्थ केवल निर्माण कार्यों की संख्या और निवेश के आंकड़े नहीं हो सकते। यदि विकास के साथ सांस लेने के लिए साफ हवा भी न बचे तो ऐसे विकास की प्राथमिकताओं पर सवाल उठना स्वाभाविक है। सरकारों की जिम्मेदारी केवल दिवाली से पहले पटाखों पर दिशा-निर्देश जारी करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। प्रदूषण नियंत्रण के लिए सालभर प्रभावी नीति और उसका सख्त क्रियान्वयन जरूरी है। निर्माण स्थलों पर धूल नियंत्रण, वाहनों से निकलने वाले धुएं पर निगरानी, औद्योगिक उत्सर्जन पर कार्रवाई, कचरा प्रबंधन और सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करने जैसे कदम कागजों से निकलकर जमीन पर दिखने चाहिए। पहाड़ों में भी पर्यटन की क्षमता के अनुरूप वाहनों और निर्माण गतिविधियों को नियंत्रित करना होगा। लेकिन सारी जिम्मेदारी सरकारों पर डालकर समाज भी अपनी भूमिका से बच नहीं सकता। त्योहारों की खुशियां दूसरों की सांसों की कीमत पर नहीं मनाई जा सकतीं। नागरिकों को भी आतिशबाजी, कचरा फैलाने और प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन के प्रति अपनी सोच बदलनी होगी। पर्यावरण संरक्षण सरकारी योजना नहीं, सामूहिक जिम्मेदारी है। उत्तराखंड राज्य आंदोलन के पीछे एक बड़ी आकांक्षा अपनी जमीन, जंगल, पानी और प्राकृतिक विरासत को बचाने की भी थी। 26 वर्ष बाद यदि इसी विरासत पर संकट गहराने लगा है तो यह आत्ममंथन का विषय है। सवाल केवल इतना नहीं कि दिवाली पर हवा कितनी जहरीली हुई, सवाल यह है कि साल के बाकी 364 दिन हम अपनी हवा को कितना सुरक्षित रख पा रहे हैं? दीपावली के दीये बुझ जाएंगे, आतिशबाजी का धुआं भी छंट जाएगा, लेकिन प्रदूषण के रूप में छोड़ा गया जहर हमारे पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों पर अपना असर छोड़ता रहेगा। उत्तराखंड को यदि वास्तव में देवभूमि और प्रकृति का प्रदेश बनाए रखना है तो अब विकास की परिभाषा बदलनी होगी। क्योंकि जिस दिन पहाड़ों की हवा भी सांस लेने लायक नहीं बचेगी, उस दिन पर्यटन के विज्ञापन, विकास के दावे और स्वच्छ पर्यावरण के नारे किसी काम नहीं आएंगे। आखिर सवाल सीधा है कि पहाड़ बचेंगे, तभी तो उत्तराखंड बचेगा!

राजनीतिक पटकथा की 'नई किस्त'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में पुराने विवादों के जिन्न एक बार फिर बाहर निकलने लगे हैं। वर्ष 2003 का जेनी प्रकरण 23 साल बाद फिर सुर्खियों में है और इस बार मामला केवल पुराने आरोपों की पुनरावृत्ति तक सीमित नहीं है। 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले यह विवाद भाजपा और कांग्रेस के बीच राजनीतिक प्रतिष्ठा की नई लड़ाई बनता दिखाई दे रहा है। पूर्व कैबिनेट मंत्री और कांग्रेस नेता हरक सिंह रावत ने भाजपा को सीधी चुनौती देकर सियासी तापमान बढ़ा दिया है। उनका ऐलान है कि यदि उनके खिलाफ एक भी आरोप साबित हुआ तो वह राजनीति से संन्यास ले लेंगे। सवाल यह है कि हरक की चुनौती भाजपा स्वीकार करेगी या यह मामला भी आरोपों की सियासी पिच पर ही खेला जाता रहेगा?

हरक सिंह रावत ने दो टूक कहा है कि सरकार चाहे तो पूरे प्रकरण की न्यायालय की निगरानी में दोबारा जांच करा ले। डीएनए परीक्षण भी करा लिया जाए। उन्होंने पुराने सीबीआई निष्कर्षों का हवाला देते हुए कहा कि जांच में उन्हें राहत मिली थी। उनका आरोप है कि भाजपा राजनीतिक बदले की भावना से 23 साल पुराने मामले को उछालकर उनकी छवि खराब करना चाहती है। हरक ने यहां तक कहा कि यदि आरोप साबित होते हैं तो वह राजनीति छोड़ देंगे। यह चुनौती अब भाजपा के लिए भी राजनीतिक असहजता का कारण बन सकती है। हरक ने जेनी प्रकरण को अंकिता भंडारी हत्याकांड से जोड़ते हुए भाजपा की मंशा पर सवाल उठाए हैं। उनका आरोप है कि अंकिता को न्याय दिलाने की मांग और भाजपा से जुड़े लोगों पर उठ रहे सवालों से जनता का ध्यान हटाने के लिए पुराने मामले को फिर से उछाला जा रहा है। यानी हरक इस विवाद को अपने व्यक्तिगत बचाव से आगे ले जाकर भाजपा की राजनीतिक रणनीति पर हमला बनाने में जुटे हैं।

लेकिन यहां भाजपा के सामने भी

◆भाजपा को दोबारा जांच और डीएनए टेस्ट की चुनौती देकर हरक ने खोला मोर्चा
◆बोले-राजनीति से ले लूंगा संन्यास, अंकिता प्रकरण से जोड़कर सरकार को घेरा
◆भाजपा और कांग्रेस के बीच राजनीतिक प्रतिष्ठा की नई लड़ाई हो गई अब शुरु

सवाल कम नहीं हैं। यदि उसके पास पुराने मामले को लेकर नए तथ्य हैं तो उन्हें सार्वजनिक क्यों नहीं किया जाता? यदि आरोपों की नए सिरे से जांच जरूरी है तो सरकार निष्पक्ष जांच का रास्ता क्यों नहीं अपनाती? केवल राजनीतिक मंचों से आरोप उछालने से न तो किसी का अपराध साबित होता है और न ही किसी को निर्दोष ठहराया जा सकता है। जेनी प्रकरण उत्तराखंड की शुरुआती राजनीतिक सत्ता का बड़ा विवाद रहा है। वर्ष 2003 में असम की युवती इंदिरा देवरी उर्फ जेनी ने तत्कालीन राजस्व मंत्री हरक सिंह रावत पर गंभीर आरोप लगाए थे। बच्चे के पितृत्व को लेकर उठे विवाद ने तत्कालीन एनडी तिवारी सरकार को असहज कर दिया था। 18 जून 2003 को मामला विधानसभा में गूंजा। विपक्ष के हमलों के बीच हरक सिंह रावत ने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था।

इसके बाद सीबीआई जांच हुई और डीएनए परीक्षण कराया गया। जांच में बच्चे और हरक सिंह रावत के डीएनए का मिलान नहीं हुआ। हरक इसी निष्कर्ष को अपनी बेगुनाही का आधार बता रहे हैं। वर्ष 2016 में भी मामला फिर राजनीतिक विवाद बना था। अब जेनी के नए दावों ने पुराने घटनाक्रम को फिर चर्चा में ला दिया है। जेनी ने पुरानी जांच पर सवाल उठाते हुए दोबारा सीबीआई जांच और डीएनए परीक्षण की मांग की है। उनका दावा है कि उस समय जांच के कई महत्वपूर्ण पहलुओं को नजरअंदाज किया गया। उन्होंने पुलिस मुख्यालय में शिकायत देकर सुरक्षा की मांग भी की है। पुलिस ने शिकायत की जांच डोईवाला क्षेत्राधिकारी को सौंपी है।

यहां सबसे बड़ा सवाल है कि यदि पुरानी जांच में हरक को राहत मिल चुकी है तो नए आरोपों का आधार क्या है? और यदि जेनी के पास नए तथ्य हैं तो उनकी निष्पक्ष जांच क्यों न हो? किसी पुराने जांच निष्कर्ष को बिना ठोस आधार खारिज नहीं किया जा सकता, लेकिन किसी शिकायत को केवल राजनीतिक विवाद बताकर दरकिनार करना भी न्यायसंगत नहीं होगा। उत्तराखंड में 2027 के विधानसभा चुनाव का बिगुल भले ही अभी औपचारिक रूप से न बजा हो, लेकिन राजनीतिक दलों ने एक-दूसरे की घेराबंदी शुरू कर दी है। अंकिता भंडारी प्रकरण में कांग्रेस लगातार भाजपा को घेर रही है। अब भाजपा को जेनी प्रकरण के बहाने कांग्रेस और हरक सिंह रावत पर हमला करने का अवसर मिल गया है। इसमें दो राय नहीं कि हरक सिंह रावत उत्तराखंड की राजनीति के अनुभवी और विवादों से घिरे रहने वाले

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

'चुनावी मौसम' में फिर याद आया 'गैरसैंण'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की सियासत में चुनाव नजदीक आते ही गैरसैंण का मुद्दा फिर जिंदा हो गया है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल ने शहीद स्मारक से ऐलान किया है कि 2027 में कांग्रेस सत्ता में आई तो गैरसैंण को स्थायी राजधानी बनाया जाएगा। जाहिर है, कांग्रेस ने एक बार फिर पहाड़ की भावनाओं को राजनीतिक धार देने के लिए राजधानी के सवाल को हथियार बनाया है। लेकिन इस ऐलान के साथ ही एक पुराना सवाल भी खड़ा हो गया है। जब कांग्रेस को गैरसैंण स्थायी राजधानी बनाने का इतना ही भरोसा और संकल्प है तो सत्ता में रहते हुए उसने यह फैसला क्यों नहीं लिया?

गैरसैंण उत्तराखंड के लिए महज एक कस्बा नहीं, बल्कि राज्य आंदोलन की भावनाओं, पहाड़ की अस्मिता और संघर्ष का प्रतीक है। आंदोलनकारियों ने अलग राज्य की लड़ाई केवल देहरादून में सत्ता का नया केंद्र बनाने के लिए नहीं लड़ी थी। उनकी अपेक्षा थी कि राजधानी पहाड़ में होगी तो शासन की प्राथमिकताओं में पहाड़ भी होगा। पलायन, बेरोजगारी, स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी सुविधाओं से जूझते पर्वतीय क्षेत्रों को सत्ता के केंद्र से जोड़ने का सपना था। लेकिन 26 साल बाद भी गैरसैंण स्थायी राजधानी नहीं बन पाई। देहरादून अस्थायी राजधानी बना रहा और गैरसैंण ग्रीष्मकालीन राजधानी के दर्जे से आगे नहीं बढ़ सका।

◆कांग्रेस का दावा, सत्ता मिली तो गैरसैंण बनेगी स्थायी राजधानी
◆शहीद स्मारक से कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल की हुंकार
◆26 साल से राजधानी के नाम पर पहाड़ को मिले हैं सिर्फ दिलासे

दिलचस्प यह है कि गैरसैंण का मुद्दा विपक्ष में रहते हुए सभी राजनीतिक दलों को खूब याद आता है, लेकिन सत्ता की कुर्सी पर बैठते ही प्राथमिकताएं बदल जाती हैं। कांग्रेस भी इससे अछूती नहीं रही। भाजपा भी गैरसैंण को लेकर बड़े-बड़े दावे करती रही है। विधानसभा भवन बना, सत्र आयोजित हुए, ग्रीष्मकालीन राजधानी की घोषणा हुई, लेकिन स्थायी राजधानी का सवाल जस का तस है। अब गणेश गोदियाल ने फिर वादा किया है। लेकिन जनता पूछ रही है कि क्या यह भी चुनावी घोषणा बनकर रह जाएगा? क्या कांग्रेस के पास स्थायी राजधानी बनाने का कोई समयबद्ध खाका है? क्या वह बताएगी कि सचिवालय, विभागों और प्रशासनिक व्यवस्था को गैरसैंण में स्थानांतरित करने की योजना क्या होगी? या फिर चुनाव के बाद यह मुद्दा भी राजनीतिक फाइलों में दफन हो जाएगा?

कांग्रेस का यह ऐलान भाजपा के लिए सीधी राजनीतिक चुनौती है। खासकर तब, जब 2027 का चुनाव सामने है और पहाड़ में पलायन, रोजगार तथा विकास का सवाल लगातार गहरा रहा है। कांग्रेस जानती है कि गैरसैंण का मुद्दा पर्वतीय क्षेत्रों में भावनात्मक और राजनीतिक दोनों स्तरों पर असर रखता है। ऐसे में शहीद स्मारक से दिया गया यह बयान केवल राजधानी की घोषणा नहीं, बल्कि पहाड़ की नाराजगी को अपने पक्ष में मोड़ने की कोशिश भी है। लेकिन कांग्रेस को यह भी समझना होगा कि अब जनता केवल भावनात्मक भाषणों से संतुष्ट होने वाली नहीं है। राज्य गठन के बाद सत्ता में रही कांग्रेस को अपने पुराने कार्यकाल का हिसाब भी देना होगा। भाजपा को भी बताना होगा कि ग्रीष्मकालीन राजधानी का दर्जा देने के बाद स्थायी राजधानी की दिशा में निर्णायक कदम क्यों नहीं उठाया गया।

उत्तराखंड की विडंबना देखिए कि जिस राज्य का गठन पहाड़ की उपेक्षा खत्म करने के लिए हुआ, उसी राज्य में पहाड़ आज भी सत्ता से दूरी महसूस कर रहा है। राजधानी कहां होगी, यह सवाल 26 साल में तय नहीं हो पाया, लेकिन चुनाव दर चुनाव इस मुद्दे पर राजनीति जरूर होती रही। गैरसैंण में विधानसभा सत्र आयोजित कर देना और उसे वास्तविक प्रशासनिक राजधानी के रूप में विकसित करना दो अलग-अलग बातें हैं। जनता को प्रतीकात्मक राजनीति नहीं, ठोस फैसले चाहिए। गैरसैंण अब किसी दल की चुनावी जागीर नहीं है। यह राज्य आंदोलनकारियों के सपनों और पहाड़ के स्वाभिमान का

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

घर में गिरने से हुई 55 वर्षीय व्यक्ति की मृत्यु!

संवाददाता

देहरादून। घर में गिरने से एक व्यक्ति की मौत हो गयी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मिली जानकारी के अनुसार आज कन्ट्रोल रूम द्वारा थाना बसंत विहार को चोरखाला क्षेत्र में एक व्यक्ति के मृत्यु की सूचना प्राप्त हुई, प्राप्त सूचना पर थाना बंसत विहार से पुलिस बल तत्काल मौके पर पहुंचा, मौके पर मृतक की पहचान सलीम अहमद पुत्र स्वर्गीय इदरीस अहमद, उम्र लगभग 55 वर्ष, निवासी चोरखाला के रूप में हुई। मृतक पेंटर का कार्य करता था तथा वर्तमान में अपनी बहन के मकान में अकेला रहता था तथा अत्यधिक शराब के सेवन का आदि था, मृतक के शरीर में कोई भी जाहिरा सघर्ष से आये चोटो के निशान नही मिले, प्रथम दृष्टया अत्यधिक शराब के सेवन से नशे में गिरकर हुई दुर्घटना के कारण आई चोटो के कारण मृत्यु होना प्रतीत हुआ है। मौके पर पुलिस द्वारा निरीक्षण कर आवश्यक जानकारी एवं साक्ष्य संकलित किए गये। शव का पंचायतनामा भरकर पोस्टमार्टम की कार्यवाही की जा रही है। प्रकरण की विस्तृत जांच एंव आवश्यक वैधानिक कार्यवाही की जा रही है।

सड़क हादसे में युवक की मौत, परिजनों ने हत्या की आशंका जताई

हरिद्वार(आरएनएस)। बहादराबाद कोतवाली क्षेत्र में ट्रैक्टर-ट्रॉली की चपेट में आने से एक व्यक्ति की मौत के मामले में परिजनों ने हत्या की आशंका जताई है। आरोप है कि हादसे के बाद साक्ष्य मिटाने के लिए घटनास्थल की सफाई की गई और मृतक का हेलमेट भी दूर फेंक दिया गया। परिजनों ने मामले में पुलिस से हत्या के आरोप लगाते हुए शिकायत की है।

मामले में पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार, खेड़ली निवासी संजय कुमार पुत्र सुरेंद्र कुमार ने शिकायत पत्र में बताया कि उनके जीजा मुनेश कुमार पुत्र रणजीत सिंह निवासी मुलदासपुर माजरा की पांच नवंबर की शाम सड़क हादसे में मौत हो गई थी।आरोप है कि बढ़ेड़ी राजपूतान निवासी अनीस के ट्रैक्टर को दानिश चला रहा था। ट्रैक्टर में यूकेलिप्टस की लकड़ियां भरी थीं और उसकी लाइट बंद थी।

शिकायत के अनुसार, घटनास्थल पर मौजूद कपिल, शुभम उर्फ कालू और अनुज हादसे के बाद से लापता हैं। घटना को संदिग्ध बताते हुए परिजनों ने हत्या की आशंका जताई है। वहीं एसएचओ अमरजीत सिंह ने बताया कि मामले में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी।

महिला के खाते से 1.44 लाख रुपये उड़ाए

रुड़की(आरएनएस)। ऑनलाइन ठगी करने वाले साइबर अपराधियों ने एक महिला को निशाना बनाते हुए उसके बैंक खाते से लाखो रुपये की रकम निकाल ली। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

मोहल्ला मलानपुरा निवासी नुसरत ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि किसी अज्ञात व्यक्ति ने ऑनलाइन धोखाधड़ी कर उनके बैंक खाते से 1 लाख 44 हजार 3०० रुपये की रकम हड़प ली। खाते से रकम निकलने की जानकारी मिलने पर पीड़िता ने पुलिस से शिकायत कर कार्रवाई की मांग की।पुलिस ने तहरीर के आधार पर अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया हैइंस्पेक्टर भगवान महर ने बताया कि ऑनलाइन ठगी के इस मामले में जांच की जा रही है और आरोपी की पहचान करने का प्रयास किया जा रहा है।

गंगनहर में मिले ग्रामीण के शव के मामले में दो लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज

रुड़की(आरएनएस)। आसफनगर निवासी एक व्यक्ति का शव गंगनहर में मिलने के मामले में पुलिस ने दो लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। मृतक की बेटी ने दोनों आरोपितों पर उसके पिता को अपने साथ ले जाने और उनके साथ मारपीट कर हत्या करने का संदेह जताया है।

पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। ग्राम आसफनगर निवासी संदीप (48) को 2० अक्टूबर को गांव का ही धनी फोन कर अपने साथ ले गया था। इसके दो दिन बाद 22 अक्टूबर को संदीप का शव गंगनहर से बरामद हुआ था। मृतक की बेटी स्वाति ने पुलिस को दी तहरीर में आरोप लगाया कि उसके पिता को अपने साथ ले जाने वाले लोगों ने उनके साथ मारपीट की और उन्हें चोटें पहुंचाईं, जिसके चलते उनकी मृत्यु हो गई।

बाइक की टक्कर से युवक गंभीर घायल

हरिद्वार(आरएनएस)। ज्वालापुर में तेज रफ्तार बाइक की टक्कर से एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। आरोप है कि हादसे के बाद आरोपी बाइक सवार मौके से फरार हो गया। वहीं घायल को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां हालत गंभीर देखते हुए उसे हायर सेंटर रेफर कर दिया गया।

मामले में पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज किया है। पुलिस के अनुसार, इम्तियाज अंसारी पुत्र गुलफाम अंसारी निवासी मोहल्ला चौहानान ने शिकायत पत्र देकर बताया कि सात नवंबर की रात को सहजाद पुत्र अब्दुल हमीद निवासी मोहल्ला चौहानान बैंक ऑफ बड़ौदा के पास मौजूद था। इसी दौरान पल्सर बाइक सवार ने तेज रफ्तार और लापरवाही से वाहन चलाते हुए सहजाद को टक्कर मार दी। हादसे में वह गंभीर रूप से घायल हो गया। पीड़ित पक्ष ने शिकायत में मुकदमा दर्ज करने और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज कि जांच कर आरोपी बाइक सवार की पहचान करने की मांग की है। वहीं एसएचओ चंद्रभान सिंह अधिकारी ने बताया कि मामले में केस दर्ज किया गया है।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

उत्तराखंड राज्य का निर्माण जिन उम्मीदों और जनाकांक्षाओं के साथ हुआ था, वे आज भी पूरी तरह साकार नहीं हो पाई: खत्री

नगर संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड राज्य स्थापना के 26 वर्ष पूरे होने के अवसर पर राज्य आंदोलन की मूल भावना और वर्तमान व्यवस्थाओं को लेकर राज्य आंदोलनकारी मोहन खत्री ने गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि पृथक उत्तराखंड राज्य का निर्माण जिन उम्मीदों और जनाकांक्षाओं के साथ हुआ था, वे आज भी पूरी तरह साकार नहीं हो पाई हैं। राज्य ने विकास के कई पड़ाव जरूर पार किए हैं, लेकिन पलायन, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण जैसी चुनौतियां अब भी बनी हुई हैं।



मोहन खत्री ने कहा कि उत्तराखंड राज्य की मांग जल, जंगल और जमीन की रक्षा तथा पहाड़ की विषम भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप विकास के लिए की गई थी। आंदोलन का मूल उद्देश्य था कि पहाड़ का पानी और पहाड़ की जवानी पहाड़ के काम आए, लेकिन 26 वर्ष बाद भी यह सपना अधूरा है। विकास परियोजनाओं के नाम पर जंगलों को नुकसान पहुंच रहा है और जमीनों की खरीद-फरोख्त को लेकर स्थानीय लोगों की चिंताएं बढ़ रही हैं। वहीं, जल संसाधनों के संरक्षण और बेहतर उपयोग के लिए प्रभावी नीति की आवश्यकता बनी हुई है।

उन्होंने विकास योजनाओं में भ्रष्टाचार, कमीशनखोरी और जवाबदेही की कमी पर चिंता जताते हुए कहा कि कई बार योजनाएं बजट और घोषणाओं तक सीमित रह जाती हैं। योजनाओं का लाभ आम जनता तक पहुंचने के बजाय व्यवस्था की खामियों में उलझ जाता है। सरकार को अपनी जवाबदेही तय करनी होगी और जनता के सवालों का जवाब देना होगा। लोकतंत्र में सवाल उठाना नागरिकों का अधिकार है, न कि अपराध।

उन्होंने कहा कि राज्य गठन के बाद सड़क, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यटन के क्षेत्र में प्रगति हुई है। चारधाम यात्रा और होम-स्टे जैसी गतिविधियों से रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं, लेकिन पहाड़ी गांवों से पलायन लगातार गंभीर चुनौती बना हुआ है। युवाओं को रोजगार और बेहतर शिक्षा के लिए महानगरों की ओर जाना पड़ रहा है। पर्यटन, जैविक खेती, बागवानी, कीवी उत्पादन, जड़ी-बूटी और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देकर गांवों में रोजगार के अवसर पैदा करने होंगे।

मोहन खत्री ने कहा कि देहरादून, हरिद्वार और हल्द्वानी जैसे शहरों के विस्तार के साथ-साथ पहाड़ी क्षेत्रों के विकास पर भी समान ध्यान देना जरूरी है। प्रत्येक गांव तक बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सड़क, पेयजल और इंटरनेट पहुंचाना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए।

उन्होंने पर्यावरण संरक्षण पर जोर देते हुए कहा कि उत्तराखंड की संवेदनशील भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए विकास योजनाएं वैज्ञानिक अध्ययन और पर्यावरणीय संतुलन के आधार पर बनाई जानी चाहिए। जंगलों, नदियों और जलस्रोतों की सुरक्षा के बिना प्रदेश का भविष्य सुरक्षित नहीं रह सकता।

अंत में उन्होंने कहा कि राज्य गठन के 26 वर्ष बाद अब केवल उपलब्धियां गिनाने के बजाय अधूरी जनाकांक्षाओं पर भी आत्ममंथन होना चाहिए। सरकार को पारदर्शिता, जवाबदेही और जनभागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। उत्तराखंड आंदोलन का वास्तविक सपना तभी पूरा होगा, जब पहाड़ के संसाधनों का लाभ पहाड़ के लोगों को मिलेगा और विकास की रोशनी अंतिम गांव और अंतिम व्यक्ति तक पहुंचेगी।

प्रोजेक्ट मुस्कान से 450 परिवारों ने मनायी दीवाली

हमारे संवाददाता

देहरादून। प्रोजेक्ट मुस्कान से दीवाली पर रोशन हुए 450 घर! नैशनल एसोसिएशन फॉर पैरेंट्स एंड स्टूडेंट्स राइट्स (एनएपीएसआर) के राष्ट्रीय अध्यक्ष आरिफ खान के अनुसार पिछले 9 वर्षों से उन निर्धन और जरूरतमंद परिवारों के लिए एक मुहिम चला रहे हैं जिनके घर धन के अभाव मे दीवाली की रोशनी नही होती और मिठाई की खुशबू नही होती ऐसे परिवारों के लिए (एनएपीएसआर) का प्रोजेक्ट मुस्कान उम्मीद का दिया लेकर आता है जो पूरे घर को रोशन कर जाता है। आरिफ खान के अनुसार प्रोजेक्ट मुस्कान (एनएपीएसआर) द्वारा विगत 9 वर्षों से निर्धन,आर्थिक रूप से कमजोर जरूरतमन्द परिवारों के लिए दीवाली पर फल,मिठाई दीये,तेल,कपड़े,खाद्य सामग्रीऔर दीवाली का शगुन इत्यादि सामग्री बांटी जाती है ताकि धन के अभाव मे कोई परिवार दीपावली की खुशियों से वंचित न रहे (एनएपीएसआर) द्वारा इस साल अपने दसवें प्रोजेक्ट मुस्कान का सफर सुबह ग्यारह बजे शुरू किया गया जिसके माध्यम से लगभग 450 से अधिक निधन,आर्थिक रूप से कमजोर जरूरतमन्द परिवारों को भाईचारे के त्यौहार दीवाली के अवसर पर दीवाली सामग्री वितरित की गयी।

आरएसएस की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर स्वयंसेवकों ने की सामूहिक प्रार्थना

हमारे संवाददाता

देहरादून। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में विश्व प्रसिद्ध श्री तुंगनाथ महादेव मंदिर में संघ के स्वयंसेवकों ने सामूहिक प्रार्थना कर जनकल्याण एवं विश्व शांति की कामना की। श्री तुंगनाथ महादेव मंदिर के कपाट शीतकाल के लिए बंद होने से पूर्व आयोजित इस कार्यक्रम में स्वयंसेवकों ने भगवान भोलेनाथ के श्रीचरणों में नमन कर देवभूमि उत्तराखंड की सुख-समृद्धि एवं मंगलमय भविष्य की प्रार्थना की।

प्रार्थना के पश्चात स्वयंसेवकों ने मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचे श्रद्धालुओं को हिमालय की प्राकृतिक धरोहर एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया। उन्होंने श्रद्धालुओं से अपील की कि धार्मिक यात्राओं के दौरान प्लास्टिक एवं अन्य कचरा इधर-उधर न फेंकें तथा देवभूमि की पवित्रता और स्वच्छता बनाए रखने में अपना योगदान दें।

स्वयंसेवकों ने कहा कि हिमालय हमारी धार्मिक आस्था का केंद्र होने के साथ-साथ देश की अमूल्य प्राकृतिक धरोहर भी है। इसकी स्वच्छता, हरियाली और प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखना



हम सभी का सामूहिक दायित्व है। धार्मिक आस्था के साथ प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना भी प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिए।इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने भी स्वयंसेवकों की इस पहल की सराहना की और पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में प्रचारक अंकुश, विद्यार्थी प्रमुख राहुल, उदय, क्रांति, बलविंदर, रितेश सहित अन्य स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

आँखों की रौशनी बढ़ाने के उपाय

हमारे शरीर का बहुत ज़रूरी अंग हमारी आँखें हैं। खूबसूरत आँखें हमें एक अलग पहचान देती हैं। नजर कमजोर होना आजकल एक सामान्य सी बात है। इस समस्या को मजबूरी मान लेना समझदारी की बात नहीं है क्योंकि सही खानपान की मदद से कमजोर नजर को ठीक किया जा सकता है। दृष्टि कमजोर होना आजकल की व्यस्ततम जीवन शैली का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गयी है। इसके लिए घंटो कंप्यूटर पर बैठ कर काम करना, घंटो टीवी देखना आंखों की रोशनी को कमजोर करने का सबसे बड़ा कारण माना जाता है। इसके अलावा कम रोशनी में स्मार्टफ़ोन, टेलीविजन और कंप्यूटर पर काम करना आंखे की रोशनी को कम कर सकता है। इसके मुख्यकारण गर्मी, शराब का सेवन, निरंतर पढना, पाचन विकार - विटामिन ए की कमी को बताया जाता है। जानिए ऐसे ही कुछ घरेलू उपाय जो आंखों की रोशनी बढ़ाने में आपकी सहायता करेंगे।

आंखों की रौशनी बढ़ने के उपाय

-रोज सुबह दूब वाली घास पर पड़ी ओस पर चलने से आंखों की रोशनी में वृद्धि होती है।

-आंखों के हर प्रकार के रोग जैसे पानी गिरना, आंखें आना, आंखों की दुर्बलता, आदि होने पर रात को आठ बादाम भिगोकर सुबह पीस कर पानी में मिलाकर पीने से आंखें स्वस्थ रहती हैं।

-त्रिफला आंखों की रोशनी के लिए बहुत अच्छी औषधि है, इसके तहत त्रिफला के क्वाथ से प्रतिदिन आंखों को धोने से आंखों की ज्योति बढती है।

- पैर के तलवों की रोजाना नारियल तेल या तिल के तेल से मालिश करने से आँखों की रोशनी बढती है।

-बिलबेरी आँखों की रौशनी बढ़ाने के लिए एक और बेहतरीन उपाय है। यह रात में भी आँखों की रौशनी की समस्या को ठीक करता है। साथ ही यह मोतियाबिंद और ग्लूकोमा से भी आँखों को बचाता है।

-हल्दी की गांठ को तुअर की दाल में उबालकर, छाया में सुखाकर, पानी में घिसकर सूर्यास्त से पूर्व दिन में दो बार आंख में काजल की तरह लगाने से आंखों की लालिमा दूर होती है।

व्यायाम

आँखों के लिए बहुत व्यायाम हैं जो आप अपनी दृष्टि को बढ़ाने के लिए कर सकते हैं। ऐसे ही एक अभ्यास के लिए, एक आरामदायक स्थिति में बैठें और अपने अंगूठे के साथ अपने हाथ को बाहर खींछे। अब अपने अंगूठे पर ध्यान केंद्रित करें। धीरे-धीरे अपने अंगूठे को अपने करीब लाएं, हर समय ध्यान केंद्रित करते हुए, जब तक आपका अंगूठा आपके चेहरे के सामने लगभग 3 इंच तक ना आ जाए और फिर दूर करें जब तक आपका हाथ पूरी तरह से फैल ना जाए। कुछ मिनटों के लिए यह करें। यह व्यायाम ध्यान केंद्रित करने और आंख की मांसपेशियों में सुधार लाने में मदद करता है। एक और उपयोगी व्यायाम है, अपनी आँखो को बाएं किनारे से दाहिने किनारे तक ले जाएं, फिर ऊपर की तरफ भौं केंद्रित करें और फिर नीचे की ओर नाक की नोंक पर देखें। आप ये अभ्यास दैनिक रूप से दिन में कई बार कर सकते हैं।

सर्दी के मौसम में शिशु को नहलाने से पहले जान लें ये बातें, वरना हो सकती है मुश्किल

पहली बार मां बनने पर महिलाओं को कई बातों के बारे में पता नहीं होता है। जैसे कि उन्हें पता नहीं होता कि सर्दी के मौसम में शिशु को कैसे नहलाना चाहिए। पहली बार शिशु को नहलाने में हर मां को डर लगता है और अगर बात सर्दी की हो तो डर और बढ़ जाता है। यहां हम आपको ठंड के मौसम में शिशु को नहलाने से पहले ध्यान रखने वाली कुछ बातों के बारे में बता रहे हैं।

कुछ पैरेंट्स साफ सफाई की वजह से शिशु को रोज नहलाना पसंद करते हैं लेकिन ठंड में बच्चे को जल्दी-जल्दी नहलाने से उसके एलर्जी, जुकाम और बीमार पड़ने का खतरा रहता है।

नवजात शिशु की त्वचा बहुत नाजुक होती है, इसलिए गुनगुने पानी के बार बार संपर्क में आने और कुछ बेबी प्रोडक्ट्स की वजह से स्किन को नुकसान पहुंच सकता है और त्वचा रूखी हो सकती है या खुजली हो सकती है।

अगर बहुत ज्यादा ठंड का मौसम है तो शिशु को नहलाने के बाद गरमाई देने का इंतजाम जरूर रखें। दिन में धूप निकलने के बाद शिशु को नहलाना सही रहता है। शिशु की अच्छी नींद के लिए आप उसे रात को सोने से पहले भी नहला सकती हैं लेकिन ठंड में दोपहर के समय नहलाना ही सही होता है क्योंकि इस समय ठंड रात की तुलना में कम होती है।

बहुत ज्यादा ठंड होने पर बाथरूम में हीटर का इस्तेमाल करें ताकि शिशु को ठंड न लगे। बाथ टब को गुनगुने पानी से भर दें और शिशु को नहलाने से पहले एक बार चैक जरूर करें कि पानी ज्यादा गर्म तो नहीं है। पानी ठीक लगने के बाद ही शिशु को अब में बैठाएं। टब में शिशु की छाती जितना पानी भरें, इससे ज्यादा पानी भरना बच्चे के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। ठंड के मौसम में देर तक शिशु को पानी में न रखें और पैरों से नहलाना शुरू करें। बच्चे को पानी से निकालकर तौलिए में लपेट लें और जल्दी से उसका बदन पोंछ दें। नहलाते समय अपने पास ही तौलिया रखें ताकि नहाने के बाद शिशु को इंतजार न करना पड़े। नहाने के बाद कपड़े पहनाने से पहले शिशु का शरीर अच्छी तरह से पोंछ लें। नहलाने के बाद शिशु की त्वचा को मॉइस्चराइज करना जरूरी है। नहलाने के बाद डायपर रैश क्रीम लगाएं।

सर्दियों में इन सब्जियों का जरूर करें सेवन, प्रतिरक्षा प्रणाली होगी मजबूत



सर्दी का मौसम नजदीक आ रहा है। ऐसे में रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होने की वजह से ठंड में सर्दी, जुकाम, खांसी और बुखार होने का खतरा बढ़ जाता है।इनसे बचाव के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करना जरूरी है। इसके लिए हमें अपनी डाइट में मौसमी सब्जियों का शामिल करना जरूरी है।चलिए फिर आज स्वास्थ्य टिप्स में हम आपको ऐसी 5 सब्जियां बताते हैं, जिनके सेवन से प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में मदद मिलेगी।

पालक

पालक का सेवन रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में मदद करता है इसलिए सर्दियों में इस सब्जी को जरूर खाना चाहिए।इसमें विटामिन ए, बी, सी, ई और के, जिंक, मैग्नीशियम और आयरन जैसे कई पोषक तत्व होते हैं।ये हड्डियों को मजबूत करने, खून को बढ़ाने और प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में कारगर हैं।आप पालक से इन व्यंजनों को बनाकर इसे डाइट में शामिल कर सकते हैं।

गाजर

गाजर भी एक ऐसी सब्जी है, जो सर्दियों के मौसम में सबसे ज्यादा खाया जाता है।यह विटामिन्स, बीटा-कैरोटीन और एंटी-ऑक्सीडेंट से भरपूर होती है, जो आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में मदद करते हैं।आप चाहें तो गाजर को सलाद के रूप में कच्चा या फिर सब्जियों के साथ पकाकर भी खा सकते हैं।सर्दियों में लगभग हर घर में गाजर का हलवा जरूर बनता है, लेकिन इस बार गाजर के पराठे भी जरूर ट्राई करें।

ब्रोकली

ब्रोकली का सेवन शरीर को स्वस्थ रखने में मददगार है।इसमें प्रोटीन, कैल्शियम, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, फाइबर, विटामिन्स और कई अन्य पोषक तत्व मौजूद होते हैं। ये आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में मदद करते हैं, जिससे बीमार होने की समस्या काफी कम हो सकती है।इसका सेवन पाचन तंत्र को स्वस्थ बनाए रखने में भी सहायक है।आप ब्रोकली से परांठे बनाकर, सलाद के रूप में या सूप में इस्तेमाल करके इसे डाइट में शामिल कर सकते हैं।



चुकंदर

सर्दियों के मौसम में चुकंदर का सेवन स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होता है।यह फाइबर, एंटी-ऑक्सीडेंट और विटामिन-सी से भरपूर होता है, जो संक्रमण और बीमारियों से लडने के लिए शरीर को मजबूत बनाता है।इस सब्जी का सेवन प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने के अलावा लीवर को डिटॉक्सिफाई करने में भी मदद करता है।आप चुकंदर का जूस बनाकर भी पी सकते हैं। इससे ये 5 प्रमुख लाभ मिलते हैं।

मूली

मूली भी सर्दियों में आने वाली एक लोकप्रिय सब्जी है।यह पोटेशियम, सोडियम, विटामिन-सी और मैग्नीशियम से भरपूर होती है। इसमें कैलोरी की मात्रा कम और पानी की मात्रा ज्यादा होती है, जो सर्दियों में हाइड्रेटेज रखने में मददगार है।इसके अलावा इसका सेवन प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में भी मदद करता है।आप मूली का सेवन गरमागरम परांठे, सब्जी, जूस या सलाद के रूप में कर सकते हैं।मूली के सेवन से ये फायदे भी मिलते हैं।

शब्द सामर्थ्य -63

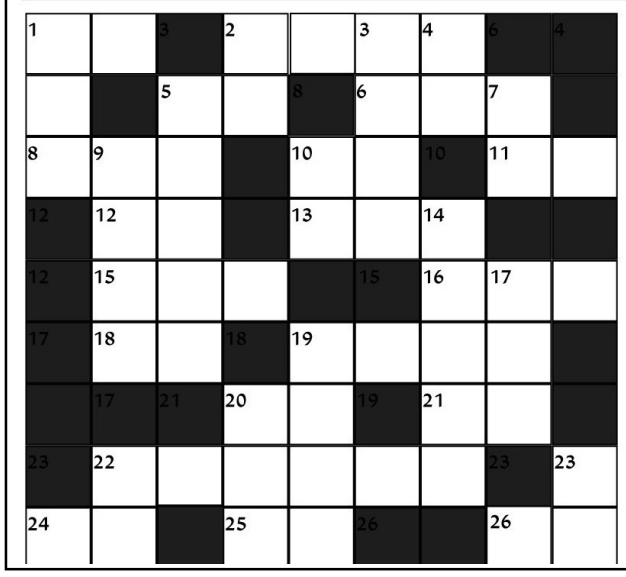
(भागवत साहू)

बाएं से दाएं :

1. पानी, नीर, अंबु 2. आना-जाना, आवागमन 5. बहुत, बढ़िया 6. दूर रहने वाला (घटना) जो वर्तमान में न घट सके 8. अबोध, नासमझ, अनाड़ी 10. सब्जी, शाक 11. निशान, उद्देश्य, अनुमान योग्य वस्तु 12. नाखून 13. द्रव पदार्थ 15. सूनसान, जनविहीन स्थान 16. चटकीला, चमकीला, चटपटा, गौरैया 18. भगवान, खुदा 19. इन दिनों, वर्तमान दिनों में 20. अग्नि, पावक 21. अन्नकण, अनाज का टुकड़ा 22. टालमटोल, बहाने बाजी 24. भैया की पत्नी 25. पांच से छोटी एक विषम संस्था 26. हत्या, कत्ल.

ऊपर से नीचे

1. दुनिया, संसार, ठोस रूप में परिवर्तित करना 2. चमक, पानी 3. बाजीगर, जादू का खेल दिखाने वाला 4. एक पंजाबी प्रेमगीत, रांझा की प्रेमिका 5. मार-काट, खून-कत्ल 7. भूमि, जमीन, भू-भाग 9. बहुत बड़ा दानी, 10. संगीत के सुरों की संख्या 14. लचीला, लोचयुक्त 17. खिसकना, अपने स्थान से हटना, विचलित होना 19. प्रवेश करना, पधारना, आना 20. धूप-दीप से पूजा 22. इसी समय 23. गुस्सा, कहर.



शब्द सामर्थ्य क्रमांक 62 का हल

स्वा	द		सा	म	ना		कै	दी
व		ख	ल	ना	य	क		वा
लं	प	ट		ना	क	क	ट	ना
बी		प				ड़ी		प
	अ	ट	प	टा			शा	न
स	ह		यो			र	ति	
ह	म		द	र	ब	द	र	
म	क	र		सी	ल			
त		क्षा		द	वा	खा	ना	

ठंड से बचने के लिए पिएं ये 5 पौष्टिक सूप, इन्हें बनाना भी है आसान

सर्दियों में शाम के समय ठंड से बचने के लिए कई लोग गर्मा-गर्म सूप का सेवन करना पसंद करते हैं। सूप न केवल स्वादिष्ट होते हैं, बल्कि इनमें मौजूद प्रोटीन शरीर को गर्माहट देने के साथ कई फायदे भी पहुंचा सकते हैं।

पालक और मूंग दाल का सूप : सबसे पहले पालक और मूंग दाल को अलग-अलग उबाल लें। फिर एक पैन में पालक, मूंग दाल, लहसुन, अदरक, हरी मिर्च और थोड़ा पानी डालकर मिलाएं। अब इस मिश्रण को ठंडा करके पीसें। इसके बाद इस पेस्ट को पैन में दाल, जीरा, नमक, हल्दी, लाल मिर्च, गरम मसाला और पानी के साथ डालकर अच्छी तरह मिलाएं और इसे 5 मिनट तक पकाएं। अंत में इसे कटोरी में निकालकर गर्मा-गर्म परोसें। मिक्स सब्जियों का सूप: सबसे पहले गाजर, खीरा, टमाटर, प्याज, शिमला मिर्च, हरी मिर्च, अदरक और लहसुन को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। फिर एक पैन में सब्जियां, नमक, काली मिर्च, थोड़ा पानी और थोड़ा तेल डालकर मिलाएं। अब इस मिश्रण को 5 मिनट तक पकाएं और जब सब्जियां नरम हो जाएं तो इसे ठंडा करके पीस लें। अंत में इसे कटोरी में डालकर गर्मा-गर्म परोसें। इसमें आप अपनी पसंद की कोई भी सब्जी शामिल कर सकते हैं।

टमाटर का सूप: सबसे पहले टमाटर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटें। फिर एक पैन में मक्खन गर्म करके उसमें लहसुन भूनें। अब इसमें टमाटर, नमक, काली मिर्च और थोड़ा पानी मिलाकर इसे 5 मिनट तक पकाएं। इसके बाद इस मिश्रण को ठंडा करके पीस लें। अंत में इस मिश्रण को पैन में दूध और एक चुटकी सोया सॉस के साथ मिलाकर 5 मिनट तक पकाएं। आखिर में इसे कटोरी में डालकर गर्मा-गर्म परोसें।

गाजर का सूप: सबसे पहले गाजर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटें। फिर एक पैन में मक्खन गर्म करके उसमें लहसुन भूनें। अब इसमें गाजर, नमक, काली मिर्च और थोड़ा पानी मिलाकर इसे 5 मिनट तक पकाएं। इसके बाद इस मिश्रण को ठंडा करके पीस लें। अंत में इस मिश्रण को पैन में दूध और एक चुटकी सोया सॉस के साथ मिलाकर 5 मिनट तक पकाएं। आखिर में इसे कटोरी में डालकर गर्मा-गर्म परोसें।

मशरूम का सूप: सबसे पहले मशरूम को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटें। फिर एक पैन में मक्खन गर्म करके उसमें लहसुन भूनें। अब इसमें मशरूम, नमक, काली मिर्च और थोड़ा पानी मिलाकर इसे 5 मिनट तक पकाएं। इसके बाद इस मिश्रण को ठंडा करके पीस लें। अंत में इस मिश्रण को पैन में दूध और एक चुटकी सोया सॉस के साथ मिलाकर 5 मिनट तक पकाएं। आखिर में इसे कटोरी में डालकर गर्मा-गर्म परोसें।

क्ले मास्क बनाम शीट मास्क: त्वचा के लिए कौन-सा विकल्प है ज्यादा बेहतर?

त्वचा की देखभाल के लिए मास्क का इस्तेमाल एक लोकप्रिय तरीका है। बाजार में 2 प्रकार के मास्क मौजूद हैं, एक क्ले वाला फेस मास्क और दूसरा शीट मास्क। दोनों के अपने-अपने फायदे और उपयोग हैं। इस लेख में हम इन दोनों मास्क के बीच के अंतर और उनके फायदे-नुकसान पर चर्चा करेंगे, जिससे आप अपनी त्वचा की जरूरत के हिसाब से सही विकल्प चुन सकें। आइए जानते हैं कि दोनों में से कौन-सा मास्क त्वचा के लिए बेहतर है।

क्ले मास्क के फायदे: क्ले मास्क प्राकृतिक तत्वों से बने होते हैं, जो त्वचा की गहराई तक जाकर उसे साफ और स्वस्थ रखते हैं। ये मास्क त्वचा के अतिरिक्त तेल को सोख लेते हैं, जिससे मुंहासे होने की संभावना कम होती है। इसके अलावा ये मास्क त्वचा की गंदगी और अशुद्धियों को भी हटाते हैं, जिससे त्वचा तरोताजा महसूस करती है। क्ले मास्क में मौजूद खनिज तत्व त्वचा को पोषण देते हैं, जिससे वह निखरी और चमकदार दिखती है।

शीट मास्क के फायदे: शीट मास्क एक प्रकार का पहले से तैयार मास्क होता है, जिसे सीधे चेहरे पर लगाया जाता है। यह त्वचा को तुरंत नमी प्रदान करता है और उसे ताजगी महसूस कराता है। शीट मास्क में मौजूद नमी देने वाले तत्व त्वचा को मुलायम बनाते हैं और उसकी चमक बढ़ाते हैं। इसे इस्तेमाल करना आसान होता है और यह यात्रा के दौरान या व्यस्त दिनचर्या में भी सुविधाजनक है। शीट मास्क अलग-अलग प्रकार की जरूरतों के हिसाब से उपलब्ध होते हैं।

दोनों मास्क के बीच का अंतर: क्ले मास्क को लगाने के बाद कुछ मिनट तक सूखने दिया जाता है और फिर इसे धो लिया जाता है। वहीं, शीट मास्क को चेहरे पर लगाने के बाद उतार लिया जाता है, बिना धोने की जरूरत पड़े। इस प्रकार दोनों मास्क का उपयोग करने का तरीका अलग-अलग है। अगर आपकी त्वचा तैलीय है या मुंहासों की समस्या है तो क्ले मास्क बेहतर रहेगा। वहीं, सूखी त्वचा वालों के लिए शीट मास्क सही रहेगा।

क्ले मास्क के नुकसान: क्ले मास्क कुछ लोगों की त्वचा पर जलन या एलर्जी पैदा कर सकते हैं, खासकर संवेदनशील त्वचा वालों के लिए। इसके अलावा अगर सही मात्रा में इस्तेमाल न किया जाए तो यह त्वचा को सुखा भी सकता है। इसके अलावा क्ले मास्क को सूखने में समय लगता है, जो कभी-कभी असुविधाजनक हो सकता है। इस प्रकार क्ले मास्क के कुछ नुकसान भी हैं, जिन्हें ध्यान में रखना जरूरी होता है।

शीट मास्क के नुकसान: शीट मास्क पर्यावरण के लिए हानिकारक हो सकते हैं, क्योंकि ये प्लास्टिक से बने होते हैं और इन्हें फेंकना मुश्किल होता है। इसके अलावा कुछ शीट मास्क में मौजूद रसायन संवेदनशील त्वचा वालों को जलन या एलर्जी पैदा कर सकते हैं।

सूर्या में चिकित्सा व्यवस्था से टकराते नजर आएंगे सनी देओल



बॉलीवुड अभिनेता सनी देओल की आगामी फिल्म सूर्या' का दमदार टीजर जारी कर दिया गया है। एम. पद्मकुमार के निर्देशन में बनी यह फिल्म एक्शन और रोमांच से भरपूर है। टीजर में सनी देओल अपने चिर-परिचित गुस्सैल और दमदार अंदाज में नजर आ रहे हैं। फिल्म में वह एक सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी की भूमिका निभा रहे हैं, जो न्याय की लड़ाई में चिकित्सा व्यवस्था की खामियों को चुनौती देता है। इस संघर्ष के दौरान उसका सामना अपने अतीत, निजी परेशानियों और सच्चाई की तलाश से होता है।

टीजर की शुरुआत सनी देओल के एक प्रभावशाली संवाद से होती है, जिसमें वह कहते हैं, एक इंसान डॉक्टर को भगवान मानता है, उसके हाथों में अपनी जिंदगी सौंप देता है। और अगर वो डॉक्टर विश्वासघात करेगा तो बेचारा क्या करेगा?

यह संवाद फिल्म की कहानी के मूल विषय को सामने लाता है। कहानी ऐसे व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमती है, जो चिकित्सा व्यवस्था में मौजूद खामियों और विश्वासघात के खिलाफ आवाज उठाता है। हालांकि, उसकी यह लड़ाई केवल व्यवस्था से टकराव तक सीमित नहीं रहती, बल्कि इसमें व्यक्तिगत संघर्ष, भावनात्मक उतार-चढ़ाव और सच्चाई को सामने लाने की जद्दोजहद भी शामिल है।

फिल्म के टीजर में सनी देओल का आक्रामक अंदाज और अन्याय के खिलाफ लड़ने का जज्बा प्रमुखता से दिखाई देता है। सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी के किरदार में वह एक ऐसी व्यवस्था को चुनौती देते नजर आएंगे, जिस पर आम लोग अपनी जिंदगी और भरोसा दोनों सौंपते हैं। फिल्म में एक्शन के साथ-साथ भावनात्मक पहलुओं को भी महत्व दिया गया है।

सूर्या' का निर्माण दीपक मुकुट, हेमंत मुकुट और लोकेश मुकुट ने किया है। फिल्म में सनी देओल के साथ प्रज्ञा जायसवाल, रवि किशन और टीनू आनंद भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में दिखाई देंगे।

एक्शन और रोमांच से भरपूर यह फिल्म 20 नवंबर 2026 को सिनेमाघरों में प्रदर्शित होगी। टीजर जारी होने के बाद दर्शकों की नजर अब फिल्म के अगले प्रचार अभियान और इसके प्रदर्शन पर टिकी है। सनी देओल की दमदार संवाद अदायगी और अन्याय के खिलाफ संघर्ष की कहानी फिल्म के प्रमुख आकर्षण माने जा रहे हैं।

4 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी श्रद्धा कपूर की फिल्म ईथा



अभिनेत्री श्रद्धा कपूर की आगामी फिल्म ईथा' की रिलीज तारीख आखिरकार तय हो गई है। यह फिल्म 4 दिसंबर 2026 को सिनेमाघरों में प्रदर्शित होगी। फिल्म का निर्देशन लक्ष्मण उतेकर ने किया है। निर्माताओं की ओर से फिल्म का पूर्वावलोकन इसी सप्ताह जारी किए जाने की जानकारी सामने आई है। जून में जारी फिल्म की पहली झलक को दर्शकों से अच्छी प्रतिक्रिया मिली थी, जिसके बाद से ही इसके प्रदर्शन को लेकर उत्सुकता बनी हुई है।

पहले ईथा' को अगस्त 2026 में सिनेमाघरों में रिलीज करने की योजना थी, लेकिन बाद में इसकी तारीख आगे बढ़ा दी गई। इसके बावजूद फिल्म को लेकर दर्शकों की दिलचस्पी कम नहीं हुई है। अब दिसंबर में इसके प्रदर्शन की नई तारीख तय होने से प्रशंसकों का इंतजार एक बार फिर चर्चा में आ गया है।

ईथा' को श्रद्धा कपूर के करियर की महत्वपूर्ण फिल्मों में से एक माना जा रहा है। फिल्म के कथानक और उनके किरदार को लेकर दर्शकों के बीच उत्सुकता है। हालांकि, फिल्म की कहानी और अन्य प्रमुख विवरणों को लेकर अभी अधिक जानकारी सामने नहीं आई है।

लक्ष्मण उतेकर अपने निर्देशन के लिए जाने जाते हैं और इस फिल्म से भी दर्शकों को काफी उम्मीदें हैं। जून में जारी पहली झलक ने फिल्म के प्रति आकर्षण बढ़ाया था। अब इसी सप्ताह पूर्वावलोकन जारी होने की खबर से दर्शकों को फिल्म की कहानी, पात्रों और प्रस्तुति के बारे में अधिक जानकारी मिलने की उम्मीद है।

ईथा' की नई रिलीज तारीख के साथ फिल्म उद्योग में इसके प्रदर्शन को लेकर चर्चा तेज हो गई है। श्रद्धा कपूर की लोकप्रियता और फिल्म के प्रति शुरुआती उत्सुकता को देखते हुए इसे दिसंबर 2026 की चर्चित फिल्मों में शामिल होने की संभावना जताई जा रही है।

अब दर्शकों की नजर फिल्म के पूर्वावलोकन और निर्माताओं की ओर से जारी होने वाली अन्य जानकारियों पर है। फिल्म को दर्शकों से कैसी प्रतिक्रिया मिलती है, यह इसके प्रदर्शन के बाद ही स्पष्ट होगा।

गौ सम्मान अभियान के दो चरण पूर्ण

संवाददाता

देहरादून। गौ सम्मान आहवान अभियान चलाया जा रहा है जिसके दो चरण पूर्ण हो चुके हैं।

आज यहां देश के पूज्य संतों के पावन सानिध्य में सम्पूर्ण देश में इस समय गौ सम्मान आहवान अभियान चलाया जा रहा है जिसके दो चरण पूर्ण हो चुके हैं, तीसरे चरण की तैयारियां जोर शोर से चल रही है। गोवर्धन पूजा के शुभ अवसर पर मां संतोषी गौशाला संतोषी माता मंदिर टपकेश्वर में गौशाला के संस्थापक भवानी गिरी महाराज और गौ सम्मान आहवान अभियान के देहरादून जिले के प्रभारी योगाचार्य डा. बिपिन जोशी के पावन सानिध्य में आज विशेष गौ पूजन किया गया गौ माताओं का मंगल तिलक कर उनको अंगबस्त्र और पुष्पमाला पहनाकर फल और गुड़ खिलाया गया साथ ही विशेष गौ सेवा के लिए डा बिपिन जोशी द्वारा गौशाला के संस्थापक भवानी गिरी महाराज को शाल उड़ाकर पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया गया। उसके बाद टपकेश्वर महादेव मंदिर परिसर में गौ सेवा आहवान अभियान को और गति देने के लिए बृहद हस्ताक्षर अभियान को और गति दी गई।



डा बिपिन जोशी ने बताया जब वैदिक कानून था गौ माता स्वयं ही सुरक्षित थी चूंकि आज संविधान का कानून लागू है तो गौ माता का संरक्षण भी कानून से ही होगा पूज्य संतों के पावन सानिध्य में नवंबर अंतिम सप्ताह से 17 दिसंबर तक संपूर्ण देश के राज्यों की राजधानियों से 31 करोड़ हस्ताक्षरों को प्रमुख सचिवों के माध्यम से राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को प्रेषित किया जाएगा। गौ माता को राष्ट्र माता अथवा राष्ट्र आराध्या बनाने का आग्रह किया जाएगा।

इस संदर्भ में आगामी 12 नवम्बर को सायं 4 बजे से बृहद हस्ताक्षर अभियान और बैठक टपकेश्वर महादेव मंदिर के महंत श्री 108 कृष्ण गिरी महाराज के पावन सानिध्य में जंगम शिवालय पलटन बाजार देहरादून में होगी। आज के अभियान में दिगम्बर भरत गिरी महाराज, राजपाल गिरी महाराज, भवानी गिरी महाराज, गौ सम्मान आहवान अभियान के देहरादून जिले के प्रभारी योगाचार्य डा. बिपिन जोशी, आचार्य रोहित नौटियाल, आचार्य आयुष पोखरियाल, जितेंद्र मलिक, हर्षपति रयाल, विजय पाल आदि का विशेष सहयोग रहा।

सू- दोकू क्र. 63

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.62का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

साइबर अपराध नियंत्रण तंत्र को और अधिक सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

संवाददाता

देहरादून। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, एसटीएफ द्वारा साइबर अपराध नियंत्रण तंत्र को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है।

उत्तराखण्ड राज्य में बढ़ते साइबर वित्तीय अपराधों पर प्रभावी अंकुश लगाने तथा साइबर अपराधों से पीड़ित व्यक्तियों की मेहनत की कमाई को सुरक्षित कराने के उद्देश्य से वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, एसटीएफ, उत्तराखण्ड द्वारा साइबर अपराध नियंत्रण तंत्र को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत उत्तराखण्ड स्टेट साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर के अंतर्गत स्थापित 'फ्रॉड मिटिगेशन सेंटर के माध्यम से प्रमुख बैंकों के नोडल अधिकारियों एवं पुलिस के मध्य बेहतर समन्वय स्थापित किया जा रहा है। साइबर वित्तीय धोखाधड़ी के उपरान्त ठगी की धनराशि को आगे अन्य बैंक खातों में स्थानान्तरित होने से रोकने, संदिग्ध बैंक खातों की पहचान करने तथा उनमें हुई धनराशि की लेयरिंग का विश्लेषण कर विवेचना की दृष्टि से आवश्यक वित्तीय एवं बैंकिंग विवरण उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य किया जाएगा। इसी क्रम में एसटीएफ के अधीन संचालित राष्ट्रीय साइबर वित्तीय हेल्पलाइन नम्बर-1930 के अंतर्गत देहरादून स्थित साइबर क्राइम पुलिस स्टेशन में भारतीय स्टेट बैंक द्वारा अपने नोडल अधिकारी की तैनाती की गई है। इसका मुख्य उद्देश्य साइबर अपराधों की रोकथाम एवं पीड़ितों की धनराशि को सुरक्षित कराने के लिए फाइनेंशियल एवं टेक्निकल विशेषज्ञता को एक ही मंच पर लाकर पुलिस एवं बैंकिंग संस्थानों के मध्य त्वरित एवं प्रभावी समन्वय स्थापित करना है। साइबर वित्तीय ध ोखाधड़ी के मामलों में पीड़ित द्वारा हेल्पलाइन नम्बर-1930 पर शिकायत दर्ज कराये जाने के उपरान्त शुरुआती समय अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। साइबर अपराधियों द्वारा धोखाधड़ी से प्राप्त ध नराशि को तत्काल विभिन्न बैंक खातों एवं अन्य माध्यमों से स्थानान्तरित करने का प्रयास किया जाता है। ऐसे में साइबर अपराध से सम्बन्धित तकनीकी विश्लेषण एवं बैंकिंग लेन-देन की वित्तीय जानकारी के बीच त्वरित समन्वय स्थापित कर संदिग्ध धनराशि को समय रहते होल्ड/फ्रीज कराया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इसी आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए एसटीएफ द्वारा 1930 कंट्रोल रूम में बैंक के नोडल अधिकारी की तैनाती की व्यवस्था की गई है, जिससे तकनीकी एवं वित्तीय स्तर पर एक साथ कार्यवाही करते हुए साइबर वित्तीय धोखाधड़ी के मामलों में त्वरित परिणाम प्राप्त किये जा सकें। पीड़ितों की धोखाधड़ी से प्राप्त धनराशि को सम्बन्धित बैंक खातों में समय रहते होल्ड/फ्रीज कराने की प्रक्रिया में तेजी आयेगी। बैंक खातों के माध्यम से ध ोखाधड़ी की धनराशि की लेयरिंग का विश्लेषण कर विवेचना हेतु आवश्यक बैंकिंग एवं वित्तीय विवरण शीघ्र उपलब्ध कराये जा सकेंगे। साइबर अपराध से सम्बन्धित तकनीकी सूचनाओं एवं बैंकिंग लेन-देन की वित्तीय जानकारी का बेहतर समन्वय स्थापित हो सकेगा। बैंकिंग लेन-देन से सम्बन्धित आवश्यक सूचनाओं एवं कार्यवाही के लिए होने वाले पत्राचार तथा प्रतीक्षा समय में कमी आयेगी। फाइनेंशियल एवं टेक्निकल विशेषज्ञता के संयुक्त उपयोग से साइबर वित्तीय अपराधों की रोकथाम, त्वरित कार्यवाही एवं पीड़ितों की धनराशि की रिकवरी की सम्भावनाओं को बढ़ाने में सहायता मिलेगी। इस व्यवस्था को और अधिक व्यापक एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से निकट भविष्य में अन्य प्रमुख बैंकों के नोडल अधिकारियों को भी उत्तराखण्ड स्टेट साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर के भवन में एक ही स्थान पर तैनात किया जाना प्रस्तावित है, जिससे सभी प्रमुख बैंकों एवं पुलिस के मध्य प्रत्यक्ष समन्वय स्थापित कर साइबर अपराधों के विरुद्ध एकीकृत रूप से कार्यवाही की जा सकेगी। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, एसटीएफ, उत्तराखण्ड द्वारा बताया गया कि वर्तमान समय में साइबर अपराधों की प्रकृति लगातार जटिल एवं तकनीकी होती जा रही है। ऐसे अपराधों में प्रभावी कार्यवाही के लिए केवल तकनीकी जानकारी ही नहीं, बल्कि बैंकिंग एवं वित्तीय लेन-देन से सम्बन्धित विशेषज्ञता का भी समान रूप से महत्वपूर्ण योगदान है। इसी को ध्यान में रखते हुए एसटीएफ द्वारा ै4ब के अंतर्गत ब्थ्डब के माध्यम से फाइनेंशियल एवं टेक्निकल तंत्र को एक साथ जोड़कर साइबर अपराध नियंत्रण व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं। भविष्य में अन्य प्रमुख बैंकों के नोडल अधिकारियों को भी एक ही स्थान पर इस व्यवस्था से जोड़कर साइबर वित्तीय धोखाधड़ी के पीड़ितों को और अधिक त्वरित सहायता उपलब्ध कराई जायेगी। एसटीएफ उत्तराखण्ड आमजन से अपील करती है कि किसी भी प्रकार की साइबर वित्तीय धोखाधड़ी होने पर बिना देरी किये तत्काल राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन नम्बर-1930 पर शिकायत दर्ज करायें अथवा ू बलइमतबतपउम.हवअ. पद पर अपनी शिकायत दर्ज करें, ताकि धोखाधड़ी से हस्तांतरित धनराशि को समय रहते सुरक्षित कराने हेतु आवश्यक कार्यवाही की जा सके।

भैलू खेलने के साथ ही खूब थिरके ग्रामीण

उत्तरकाशी (आरएनएस)। जिलेभर में दीपावली का पर्व हर्षोल्लास और धूमधाम से मनाया गया। घरों में विधि विधान से लक्ष्मी गणेश की पूजा अर्चना के बाद दीप जलाए गए। लोगों ने रंगोली सजाकर और आतिशबाजी कर त्योहार की खुशियां मनाईं। वहीं, रवांई घाटी के ग्रामीणों ने भैलू पूजन के बाद ढोल की थाप पर देर रात तक रासों किया। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग मंदिर परिसरों में एकत्र हुए और सामूहिक रूप से पर्व मनाया। उधर, रवांई घाटी की रामा सिराईं और कमल सिराईं पट्टी के कई गांवों में कार्तिक बग्वाल की विशेष धूम रही। जेयसाण तोक के खलाड़ी, नेत्री, चंदेली, ढकाड़ा, मेहराणा और करड़ा गांवों के साथ ही कुमोला तोक के पुजेली, कुमोला, पाणी गांव, बेणाई, स्वील और ठडूंग सहित आसपास के गांवों में भी पारंपरिक उत्सव मनाया गया।

चार दिसंबर से शुरु होगा सिद्धबली बाबा वार्षिक अनुष्ठान महोत्सव

कोटद्वार(आरएनएस)। खोह नदी के तट पर स्थित सिद्धबली मंदिर में चार दिसंबर से तीन दिवसीय श्री सिद्धबली बाबा वार्षिक अनुष्ठान महोत्सव का आयोजन होगा।

महोत्सव के पहले दिन नगर में भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। इसमें देवी-देवताओं की डिजिटल झांकियां मुख्य आकर्षण रहेंगी। वहीं, तीनों दिन धार्मिक अनुष्ठानों के साथ भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।सिद्धबली मंदिर समिति के उपाध्यक्ष एवं अनुष्ठान समन्वयक विवेक अग्रवाल और महासचिव शिव प्रसाद पोखरियाल ने बताया कि महोत्सव के पहले दिन सुबह पांच बजे पिंडी महाभिषेक, सात बजे मंदिर परिक्रमा और एकादश कुंडीय यज्ञ होगा। सुबह आठ बजे सिद्धों की डांडा यात्रा निकाली जाएगी। शाम को सिद्धबली मंदिर से देवी मंदिर तक भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। इसमें देवी-देवताओं की डिजिटल एवं यंत्र चालित झांकियां आकर्षण का केंद्र रहेंगी। झंडाचौक में वासुकी फ्यूजन बैंड की प्रस्तुति होगी। इसके अलावा मालवीय उद्यान और देवी मंदिर में भी सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।पांच दिसंबर को सुबह पांच बजे पिंडी महाभिषेक और सात बजे एकादश कुंडीय यज्ञ होगा। अपराह्न एक बजे से गढ़वाली भजन संध्या आयोजित होगी। प्रसिद्ध गढ़वाली भजन गायक सौरभ मैठाणी और उनके साथी कलाकार भजनों की प्रस्तुति देंगे। मुख्य अतिथि जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीश्री 1008 राज राजेश्वरानंद महाराज होंगे।

छह दिसंबर को सुबह पांच बजे पिंडी महाभिषेक, सात बजे मंदिर परिक्रमा और एकादश कुंडीय यज्ञ होगा। सुबह दस बजे गढ़वाली जागर का आयोजन किया जाएगा। दोपहर 12 बजे सिद्धबाबा को सवा मन रोट का भोग लगाने के बाद श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया जाएगा। अपराह्न एक बजे से हिंदी भजन संध्या होगी, जिसमें इंडियन आइडल फेम और प्रसिद्ध भजन गायक नितिन कुमार व उनके साथी कलाकार भजनों की प्रस्तुति देंगे।



'भाई दूज राइड अगेंस्ट एयर पॉल्यूशन' का आयोजन

नगर संवाददाता

देहरादून। भाई दूज के पावन अवसर पर वायु प्रदूषण के प्रति जन-जागरूकता फैलाने एवं पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के उद्देश्य से देहरादून साइक्लिंग क्लब द्वारा आज प्रात: 'भाई दूज राइड अगेंस्ट एयर पॉल्यूशन' का आयोजन किया गया। लगभग 55 किलोमीटर लंबी इस जागरूकता साइकिल राइड में क्लब के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। राइड का शुभारंभ प्रेमनगर चौक से हुआ। साइकिल सवारों ने पंडितवाड़ी, बल्लूपुर चौक, घंटाघर, सर्वे चौक, रायपुर चौक, मालदेवता पुल होते हुए ड्वारा की पहाड़ियों तक यात्रा की और पुन: वापस लौटे। राइड का नेतृत्व क्लब के पर्यावरण प्रमुख प्रणय पंत, क्लाइमेट चेंज प्रमुख आर्यन चौहान एवं ग्रीन देहरादून प्रमुख आदर्श रावत ने किया।

इस अवसर पर क्लब के पर्यावरण प्रमुख प्रणय पंत ने कहा कि दीपावली और भाई दूज जैसे त्योहार हमें खुशियां बांटने और परिवार के साथ समय बिताने का अवसर देते हैं। लेकिन पटाखों के अत्यधिक इस्तेमाल से वायु गुणवत्ता प्रभावित होती है और पर्यावरण को भारी नुकसान पहुंचता है। इस साइकिल राइड के माध्यम से क्लब विशेष रूप से स्कूली बच्चों और युवाओं को पर्यावरण के अनुकूल त्योहार मनाने का संदेश देना चाहता है। क्लब के क्लाइमेट चेंज प्रमुख आर्यन चौहान ने कहा कि दीपावली के दौरान पटाखों के कारण वायु प्रदूषण और कार्बन डाइऑक्साइड सहित अन्य प्रदूषकों का उत्सर्जन बढ़ता है। उन्होंने स्कूली विद्यार्थियों से जलवायु संरक्षण के लिए आगे आने और देहरादून के पर्यावरण को बचाने में अपनी भूमिका निभाने की अपील की।

ग्रीन देहरादून प्रमुख आदर्श रावत ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में देहरादून में पर्यटकों और आबादी का दबाव तेजी से बढ़ा है। इसके परिणामस्वरूप कचरा प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण बड़ी चुनौतियां बनते जा रहे हैं। उन्होंने स्कूली बच्चों, कॉलेज के युवाओं और शहरवासियों से अपील की कि वे स्वच्छ, हरित एवं पर्यावरण के अनुकूल देहरादून बनाने में अपनी जिम्मेदारी निभाएं, ताकि इस इको-सेंसिटिव शहर की प्राकृतिक सुंदरता और पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सके।

क्लब के अध्यक्ष हरिसिमरन सिंह ने कहा कि भाई दूज का त्योहार भाई-बहन के प्रेम, विश्वास और सुरक्षा का प्रतीक है। जिस प्रकार हम अपने परिवार की सुरक्षा और खुशियों का ध्यान रखते हैं, उसी प्रकार हमें अपने पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य की भी चिंता करनी चाहिए। क्लब के युवाओं द्वारा साइकिलिंग को सामाजिक जागरूकता का माध्यम बनाकर एक सकारात्मक संदेश देना वास्तव में एक सराहनीय और आउट ऑफ द बॉक्स पहल है। इस जागरूकता राइड में प्रणय पंत, आर्यन चौहान, आदर्श रावत, अजय अग्रवाल, मनोज बिष्ट, चित्रांग, सुरिंदर कुमार, जयंती प्रसाद गौड़, तेजिंदर पाल सिंह, रिक्की गोस्वामी, आरती, अमन, मोहम्मद हैरिस, हरिसिमरन सिंह, मनिंदर सिंह आदि उपस्थित रहे।

राजनीतिक पटकथा की 'नई किस्त'...

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

नेताओं में रहे हैं। सत्ता के समीकरण बदलने में उनकी भूमिका भी किसी से छिपी नहीं है। लेकिन इस बार उन्होंने अपने राजनीतिक भविष्य को ही दांव पर लगाने जैसी चुनौती दे दी है। भाजपा के लिए भी यह आसान नहीं होगा कि वह इस चुनौती को केवल बयानबाजी मानकर छोड़ दे।

दरअसल, उत्तराखंड की राजनीति में अब मुद्दों से ज्यादा एक-दूसरे के पुराने हिसाब-किताब खोलने की होड़ दिखाई दे रही है। जनता रोजगार, पलायन, महंगाई, भ्रष्टाचार और बदहाल स्वास्थ्य सेवाओं का जवाब मांग रही है, लेकिन सियासत 23 साल पुराने विवादों में उलझी है। हरक की चुनौती, भाजपा का पलटवार और जेनी के नए आरोपों के बीच असली सवाल कहीं पीछे नहीं छूटना चाहिए। आखिर सच क्या है और उस सच तक पहुंचने की जिम्मेदारी कौन निभाएगा? राजनीति में संन्यास की चुनौती देना आसान है, लेकिन न्याय और जवाबदेही से संन्यास नहीं लिया जा सकता। 23 साल पुराने इस मामले में अब न राजनीतिक पटकथा चाहिए, न आरोपों की नई किस्त। जरूरत है तो सिर्फ निष्पक्ष जांच और निर्णायक सच की।

'चुनावी मौसम' में फिर याद आया..

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

सवाल है। कांग्रेस ने सत्ता में आने पर स्थायी राजधानी बनाने का वादा किया है, लेकिन उसे यह भी बताना होगा कि सत्ता में रहते हुए वह अब तक क्या करती रही। भाजपा को भी अपने ग्रीष्मकालीन राजधानी के दावों का हिसाब देना होगा। आखिर कब तक पहाड़ की भावनाओं को चुनावी मंचों पर भुनाया जाता रहेगा? 26 साल बाद उत्तराखंड को राजधानी पर एक और राजनीतिक घोषणा नहीं, बल्कि अंतिम और ईमानदार फैसला चाहिए। वरना गैरसैंण हर चुनाव में याद आएगा और चुनाव खत्म होते ही फिर भुला दिया जाएगा।

स्वच्छ, सुंदर और आधुनिक शहरों के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है राज्य सरकार : मुख्यमंत्री

नगर संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंगलवार को ऋषिकेश के चन्द्रेश्वरनगर में आयोजित कार्यक्रम में देवभूमि रजत जयंती पार्कों एवं विभिन्न विकास योजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। मुख्यमंत्री ने देहरादून, हरिद्वार, ऊधमसिंह नगर एवं उत्तरकाशी जनपद के 9 नगर निकायों में विकसित देवभूमि रजत जयंती पार्कों को जनता को समर्पित किया। उन्होंने देहरादून जनपद में 36 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली 7 विकास योजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास भी किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने नगर निकायों में स्वच्छता व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए 8 कूड़ा संग्रहण वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को राज्य स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए राज्य निर्माण आंदोलन के शहीदों एवं आंदोलनकारियों को नमन किया। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड की रजत जयंती के अवसर पर राज्य सरकार ने संकल्प लिया था कि राज्य स्थापना की स्मृतियां केवल समारोहों तक सीमित न रहें, बल्कि विकास कार्यों के रूप में धरातल पर दिखाई दें। इसी उद्देश्य से प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में देवभूमि रजत जयंती पार्क विकसित करने का निर्णय लिया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जिन स्थानों पर पहले कूड़े के ढेर और झाड़ियां दिखाई देती थीं, आज वे हरे-भरे एवं सुव्यवस्थित सार्वजनिक स्थलों के रूप में विकसित हो रहे हैं। ये पार्क बच्चों के खेलने, बुजुर्गों के टहलने, महिलाओं के बैठने तथा युवाओं के योग एवं व्यायाम के लिए बेहतर स्थान उपलब्ध कराएंगे। इनमें उत्तराखण्ड की संस्कृति, लोक परंपराओं और स्थानीय वनस्पतियों की झलक भी दिखाई देगी। उन्होंने नगर निकायों से इन पार्कों का रखरखाव जनभागीदारी से सुनिश्चित करने का



आह्वान किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार का प्रयास विकास का लाभ प्रत्येक नगर और प्रत्येक वार्ड तक पहुंचाना है। शहरों में आधारभूत सुविधाओं के विस्तार के साथ स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और नागरिक सुविधाओं को प्राथमिकता दी जा रही है। प्रदेश के सभी 108 नगर निकाय खुले में शौच से मुक्त हो चुके हैं। ऋषिकेश एवं हरिद्वार को वाटर प्लस प्रमाणन प्राप्त हुआ है। प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में 90 प्रतिशत से अधिक कचरे का वैज्ञानिक प्रसंस्करण किया जा रहा है। पुराने कचरे के निस्तारण से लगभग 109 एकड़ भूमि को पुन: उपयोग योग्य बनाया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि रुद्रपुर एवं मसूरी में कचरे से बायोगैस का उत्पादन किया जा रहा है। चारधाम यात्रा मार्गों पर डिजिटल डिपॉजिट-रिफंड व्यवस्था के माध्यम से 60 हजार किलोग्राम से अधिक प्लास्टिक वापस एकत्र किया गया है। प्रदेश के 107 नगर निकायों के लिए लगभग 1,375 करोड़ रुपये की विस्तृत स्वच्छता कार्ययोजना तैयार की गई है। इसके अंतर्गत 27 सीवेज एवं फीकल स्लज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किए जा रहे हैं। सफाई कार्यों का मशीनीकरण भी किया जा रहा है, ताकि पर्यावरण मित्रों को असुरक्षित परिस्थितियों में कार्य न करना पड़े।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शहरों में बेहतर जीवन के लिए स्वच्छ पेयजल, सीवरेज एवं मजबूत आधारभूत सुविधाएं आवश्यक हैं। अमृत योजना के प्रथम चरण में स्वीकृत 151 परियोजनाओं में से 148 पूरी हो चुकी हैं। इनसे 72 हजार से अधिक घरों को नल कनेक्शन उपलब्ध कराए गए हैं। अमृत 2.0 के अंतर्गत लगभग 650 करोड़ रुपये की परियोजनाओं के माध्यम से 40 हजार अतिरिक्त घरों तक पेयजल पहुंचाने तथा जलस्रोतों एवं तालाबों के पुनर्जीवन का कार्य किया जा रहा है। ऋषिकेश सहित प्रदेश के चयनित शहरों में लगभग 874 करोड़ रुपये से पेयजल, सीवरेज एवं शहरी आधारभूत सुविधाओं का विकास किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शहरों का विकास तभी सार्थक है, जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत प्रदेश में 62 हजार से अधिक आवास स्वीकृत किए गए हैं, जबकि 50 हजार से अधिक परिवारों को पक्के मकान उपलब्ध कराए जा चुके हैं। जरूरतमंदों के लिए प्रदेश में 35 रैन बसेरे संचालित किए जा रहे हैं। प्रदेश के 114 शहरी आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के माध्यम से 3 लाख से अधिक लोगों को उनके घर के नजदीक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि सुशासन का अर्थ है कि नागरिकों को छोटे-छोटे कार्यों के लिए सरकारी कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें। इसी उद्देश्य से नगर निकायों की सेवाओं को डिजिटल बनाया जा रहा है।

इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री सुबोध उनियाल, विधायक ऋषिकेश प्रेमचंद अग्रवाल, महापौर नगर निगम ऋषिकेश शंभू पासवान, भाजपा जिलाध्यक्ष देहरादून राजेन्द्र तड़ियाल, राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती कुसुम कण्डवाल, निदेशक शहरी विकास विनोद गिरी गोस्वामी सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक उपस्थित थे।

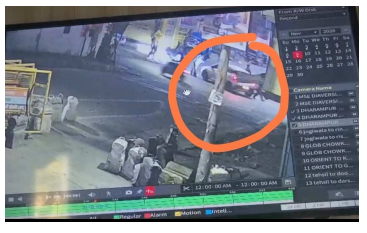
नाबालिग की दोस्त की लापरवाही के कारण हुई थी मौत!

हमारे संवाददाता

देहरादून। देहरादून के डालनवाला क्षेत्र में नाबालिग अर्श अंसारी की मौत के बाद बवाल मच गया। परिजनों ने आरोप लगाया कि उसकी उसी के दोस्त ने हत्या की है क्योंकि दिवाली की रात अर्श अंसारी अपने दोस्त के घर गया था लेकिन अब पुलिस के द्वारा एक सीसीटीवी उपलब्ध कराया गया जिसमें साफ जाहिर हो रहा है कि अर्श अंसारी की हत्या नहीं हुई बल्कि उसी के दोस्त के कारण उसकी मौत हुई है।

दरअसल इस वीडियो में साफ तौर पर देखा जा सकता है कि दो पक्षों के बीच में विवाद होता है जिसके बाद अर्श अंसारी अपने दोस्त के साथ भागते हुए कार में बैठने की कोशिश करता है लेकिन उसका दोस्त तेजी और लापरवाही से गाड़ी बैक करता है जिसकी चपेट में अर्श अंसारी आ जाता है।

बता दे कि दीवाली की रात में कार सवार युवकों व स्कूटी सवार युवको के मध्य हुए विवाद के दौरान कार चालक द्वारा अचानक तेजी व लापरवाही से कार पीछे के दौरान मृतक युवक की कार की चपेट में आने व गम्भीर रूप से घायल होने के कारण अर्श की मौत हुई। थाना



डालनवाला पर वादी नदीम अन्सारी निवासी ई-43 केवल विहार, सहस्त्रधारा रोड, ने कोतवाली डालनवाला एक प्रार्थना पत्र गया कि8 नवंबर को वादी के पुत्र अर्श अन्सारी के दोस्त श्रेयस मंमगाई, निवासी नेहरू कॉलोनी, देहरादून द्वारा दिवाली मनाने के लिए अर्श अन्सारी को अपने घर पर बुलाया था तथा रात्रि फोन करने पर कहा गया कि अर्श सुबह आ जाएगा। सुबह श्रेयस की माता का फोन आया कि तुम्हारा बेटा मोर्चरी में मृत पड़ा है। मृतक के परिजनों की तहरीर के आधार पर थाना डालनवाला पर मुकदमा दर्ज किया गया। अब तक की जांच के दौरान यह तथ्य प्रकाश में आये कि दीपावली की देर रात्री युवक अपने अन्य साथियों के साथ था, इसी दौरान रेसकोर्स सूरी चौक पर दूसरे पक्ष स्कूटी चालकों के साथ हुए विवाद के प्रकरण में अग्रवाल बेकरी निकट धर्मपुर चौक में कार चालक युवकों व स्कूटी चालक युवकों के बीच पुन: विवाद होने पर कार चालक द्वारा अचानक लापरवाही व तेजी से कार पीछे करने के दौरान मृतक युवक कार के पिछले टायर की चपेट में आ गया, जिससे वह जिसमें गम्भीर रूप से घायल हो गया जिस कारण उसकी मृत्यू हो गयी। प्रकरण के सभी पहलुओं की गहनता से जाचं की जा रही है। इस वीडियो में मृतक गाड़ी में सवार है व गाड़ी से उतर रहा है अपने साथियों के साथ और भगदड़ मैं कार के पीछे चपेट में आ गया।

वादों के 'बाजार' में जनता के सवाल 'लाचार'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में अब चुनावी बिसात बिछ चुकी है। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, सबके निशाने पर 2027 का विधानसभा चुनाव है। भाजपा को तीसरी बार सत्ता में लौटने की बेचैनी है तो कांग्रेस को सत्ता में वापसी का सुनहरा अवसर दिखाई दे रहा है। भाजपा ने 65 पार का लक्ष्य उछाल दिया है, कांग्रेस बदलाव का दावा कर रही है। नेताओं की बयानबाजी तेज है, राजनीतिक यात्राओं का शोर है, पुराने विवादों की फाइलें खुल रही हैं और नए वादों की झड़ी लग रही है। लेकिन इस पूरी सियासी कवायद में एक चेहरा गायब है। आम उत्तराखंडी, जिसके नाम पर सत्ता भी मांगी जाती है और विपक्ष भी राजनीति करता है।

उत्तराखंड की राजनीति का सबसे बड़ा विरोधाभास यही है कि राज्य गठन के 26 साल बाद भी बुनियादी सवाल वहीं खड़े हैं। पहाड़ खाली हो रहे हैं, युवा रोजगार की तलाश में प्रदेश छोड़ रहे हैं, गांवों में स्कूल और अस्पताल बदहाल हैं और खेती-किसानी संकट से जूझ रही है। दूसरी तरफ राजनीतिक दल विकास के आंकड़ों, घोषणाओं और उपलब्धियों के जरिए अपनी-अपनी पीठ थपथपा रहे हैं। सवाल है कि आखिर इन 26 वर्षों में सत्ता के इतने चेहरे बदलने के बावजूद आम आदमी की जिंदगी में कितना बदलाव आया? भाजपा के लिए इस बार मुकाबला केवल चुनाव जीतने का नहीं, बल्कि लगातार तीसरी बार सत्ता में लौटकर इतिहास रचने का है। अमित शाह ने 65 पार का लक्ष्य देकर पार्टी के सामने बड़ी चुनौती रख दी है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के चेहरे पर चुनाव लड़ने की तैयारी है। संगठन को मजबूत करने, बूथ स्तर पर पकड़ बनाने और कमजोर सीटों पर नए सिरे से रणनीति तैयार करने का काम चल रहा है।



◆26 साल के उत्तराखंड का हिसाब देने को कोई भी नहीं है तैयार
◆भाजपा को 65 पार की सनक, कांग्रेस को सत्ता वापसी की आस
◆उत्तराखंड राज्य में कुर्सी के लिए शह-मात का खेल हो गया तेज

लेकिन 65 पार का लक्ष्य घोषित कर देने से जनता का समर्थन नहीं मिल जाता। भाजपा को अपने दस साल के शासन का हिसाब भी देना होगा। बेरोजगारी, भर्ती विवाद, भू-कानून, अंकिता भंडारी प्रकरण और पलायन जैसे सवालों से पार्टी को दो-चार होना पड़ेगा। सरकार अपनी उपलब्धियां गिनाएगी, लेकिन जनता अपनी परेशानियों का हिसाब मांगेगी। यही अंतर चुनाव में निर्णायक हो सकता है। कांग्रेस को लगता है कि भाजपा के खिलाफ नाराजगी उसे सत्ता तक पहुंचा सकती है। प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और गैरसैंण को लेकर सरकार पर हमलावर हैं। हरीश रावत, प्रीतम सिंह, यशपाल आर्य और हरक सिंह रावत जैसे अनुभवी नेताओं के सहारे पार्टी अपनी जमीन मजबूत करना चाहती है।

लेकिन कांग्रेस के सामने सबसे बड़ा सवाल अपनी एकजुटता का है। क्या पार्टी के नेता व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं से ऊपर उठकर एक मंच पर आ पाएंगे? क्या टिकट वितरण के समय गुटबाजी फिर सिर नहीं उठाएगी? क्या कांग्रेस के पास भाजपा को चुनौती देने के लिए केवल आरोप हैं या कोई ठोस वैकल्पिक विकास माडल भी है? कांग्रेस को यह भी याद रखना होगा कि जनता उसकी पुरानी सरकारों का हिसाब भूली नहीं है। गैरसैंण को स्थायी राजधानी बनाने का वादा आज किया जा रहा है, लेकिन सत्ता में रहते हुए यह फैसला क्यों नहीं हुआ? विपक्ष में रहते हुए पहाड़ की भावनाएं और सत्ता में रहते हुए प्रशासनिक मजबूरियां। यह दोहरा चरित्र अब सवालों के घेरे में है।

अंकिता भंडारी प्रकरण ने भाजपा सरकार को लगातार असहज किया है। कांग्रेस इस मामले में वीआईपी की भूमिका और जांच को लेकर सवाल उठा रही है। वहीं गैरसैंण का सवाल एक बार फिर चुनावी बहस में लौट आया है। भू-कानून और मूल निवास का मुद्दा भी युवाओं तथा क्षेत्रीय संगठनों के बीच महत्वपूर्ण बना हुआ है। इन मुद्दों की गंभीरता से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन खतरा यह है कि राजनीतिक दल इन सवालों का समाधान खोजने के बजाय इन्हें चुनावी हथियार बनाकर इस्तेमाल करने लगें। अंकिता को न्याय, गैरसैंण को राजधानी और पहाड़ को उसका अधिकार किसी पार्टी का चुनावी नारा नहीं, राज्य की सामूहिक जिम्मेदारी है।

उत्तराखंड क्रांति दल, आम आदमी पार्टी और दूसरे क्षेत्रीय राजनीतिक समूह भी अपनी संभावनाएं तलाश रहे हैं। यूकेडी राज्य आंदोलन की विरासत के सहारे फिर राजनीतिक जमीन हासिल करना चाहती है। छोटे दलों और नए चेहरों की सक्रियता से कई विधानसभा क्षेत्रों में समीकरण बदल सकते हैं। हालांकि प्रदेश की राजनीति में अब तक भाजपा और कांग्रेस का ही वर्चस्व रहा है। लेकिन क्षेत्रीय असंतोष को यदि कोई राजनीतिक ताकत संगठित करने में सफल रही तो दोनों राष्ट्रीय दलों के लिए मुश्किलें बढ़ सकती हैं। खासकर उन सीटों पर जहां स्थानीय मुद्दे और उम्मीदवार की व्यक्तिगत पकड़ चुनावी परिणाम तय करते हैं।

आज उत्तराखंड को केवल राजनीतिक नेतृत्व बदलने की नहीं, राजनीतिक सोच बदलने की जरूरत है। राज्य गठन के समय जिस पहाड़ के सपने दिखाए गए थे, वह आज भी अधूरे हैं। रोजगार के लिए पलायन, स्वास्थ्य सेवाओं के लिए मैदानी शहरों की दौड़, शिक्षा के लिए निजी संस्थानों पर निर्भरता और खेती से टूटता मोह बताता है कि विकास का सरकारी मॉडल अभी भी पहाड़ की जरूरतों के अनुरूप नहीं बन पाया है। भाजपा दस साल की सत्ता का हिसाब दे और कांग्रेस अपने पुराने शासन का। दोनों बताएं कि अगले पांच साल में पलायन रोकने, स्थानीय रोजगार पैदा करने, गांवों को आबाद रखने और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए उनके पास क्या ठोस योजना है। उत्तराखंड की राजनीति आज एक अजीब मोड़ पर है। भाजपा को 65 सीटें चाहिए, कांग्रेस को सत्ता चाहिए, छोटे दलों को अपनी राजनीतिक जमीन चाहिए और नेताओं को अपनी सियासी हैसियत बचानी है। लेकिन उत्तराखंड को क्या चाहिए, इस पर बहस सबसे कम हो रही है।

महिला की धारदार हथियार से हत्या, मचा हड़कंप

हमारे संवाददाता

नैनीताल। रामनगर के ग्राम छोई के किशनपुर क्षेत्र में देर रात एक 56 वर्षीय महिला की धारदार हथियार से हत्या किए जाने से इलाके में सनसनी फैल गई। महिला का शव मिलने के बाद पूरे क्षेत्र में दहशत का माहौल है। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर शव कब्जे में लिया और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं, मृतका के बच्चों ने पड़ोसियों पर हत्या का आरोप लगाते हुए मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की है।



जानकारी के अनुसार किशनपुर छोई निवासी विमला देवी (56) पत्नी स्व. खिलाफ सिंह बिष्ट की देर रात धारदार हथियार से हत्या कर दी गई। घटना का पता सुबह स्थानीय लोगों को चला, जिसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण किया। महिला की हत्या की खबर फैलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर एकत्र हो गए।

मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने फोरेंसिक टीम को भी घटनास्थल पर बुलाया। टीम ने मौके से महत्वपूर्ण साक्ष्य जुटाए हैं। सीओ रविकांत सेमवाल ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस हत्या के कारणों का पता लगाने के साथ ही घटना में शामिल व्यक्ति की पहचान करने में जुटी है। मृतका के चार बच्चे हैं। घटना के बाद से परिवार में कोहराम मचा हुआ है और पूरे क्षेत्र में दहशत का माहौल बना हुआ है।

मुख्यमंत्री ने गौ माता की विधि-विधान से की पूजा-अर्चना

संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंगलवार को गोवर्धन पूजा के पावन अवसर पर मुख्यमंत्री आवास में गौ माता की विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। मुख्यमंत्री ने गौ माता को तिलक लगाकर पुष्पमाला पहनाई तथा प्रदेशवासियों के सुख, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की।



मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को गोवर्धन पूजा की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह पर्व प्रकृति, पशुधन एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमारी आस्था और कृतज्ञता का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में गौ माता का विशेष महत्व है। गौ संरक्षण एवं संवर्धन हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा का अभिन्न हिस्सा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गोवर्धन पूजा का पर्व हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीवन जीने तथा सभी जीवों के प्रति करुणा एवं संवेदनशीलता का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि गौ सेवा एवं संरक्षण के साथ ही पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी हम सभी का सामूहिक दायित्व है।

प्राचीन जंगम शिवालय मंदिर में हुआ पूजन, भंडारे का भी आयोजन

हमारे संवाददाता

देहरादून। गोवर्धन पूजा के पावन अवसर पर देहरादून के पलटन बाजार स्थित प्राचीन जंगम शिवालय मंदिर में विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना की गई। इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने भगवान की पूजा कर देश एवं प्रदेश की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। पूजन के उपरांत मंदिर परिसर में भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।



इस अवसर पर कांग्रेस प्रदेश उपाध्यक्ष लालचंद्र शर्मा ने समस्त प्रदेशवासियों को गोवर्धन पूजा की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में पर्व और त्योहार हमारी धार्मिक आस्था, परंपराओं और सामाजिक एकता के प्रतीक हैं। गोवर्धन पूजा प्रकृति, गौवंश और पर्यावरण के प्रति सम्मान एवं संरक्षण का संदेश देती है। ऐसे धार्मिक आयोजन समाज में आपसी प्रेम, सद्भाव और भाईचारे की भावना को मजबूत करते हैं।

श्री टपकेश्वर महादेव मंदिर के महंत श्री कृष्णा गिरी जी महाराज ने गोवर्धन पूजा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सनातन संस्कृति में प्रत्येक पर्व का अपना आध्यात्मिक और सामाजिक महत्व है। गोवर्धन पूजा हमें प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, गौसेवा और सेवा भाव की प्रेरणा देती है। धार्मिक आयोजनों के माध्यम से हमारी प्राचीन परंपराएं आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचती हैं।

कार्यक्रम में दिगंबर रवि गिरी जी, दिगंबर तेज गिरी जी, आचार्य मनोज डांडिया, लालचंद्र शर्मा,महेश खंडेलवाल, अनुपम शर्मा, सुशील अग्रवाल, अशोक मिश्रा, अजय कपूर एवं रोशन राणा सहित अन्य श्रद्धालु उपस्थित रहे।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।